रजि.पंजीयन क्रमांक : यूपीएचआईएन/2006/16823

विचार सूचक

संस्थापक स्व. डॉ. सूर्य नारायण मिश्र

वर्ष - 21 | अंक-17 | उन्नाव | मंगलवार 27 मई 2025 | प्रातः संस्करण | (पृष्ठ-6) | मूल्य मात्र 2 रुपए

मोदी ने दाहोद से किया 24 हजार करोड़ रु की विकास परियोजनाओं का लोकार्पण, शिलान्यास

ऑपरेशन सिंदूर सिर्फ सैन्य कार्रवाई नहीं, यह संस्कारों व भावनाओं की अभिव्यक्ति है : प्रधानमंत्री मोदी

दाहोद,(एजेंसी)। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने कहा कि कश्मीर के पहलगाम में आर्तकियों ने बच्चों के सामने पिता को गोली मार दी। इससे हमारा खून खौल उठा। आतंकवादियों ने 140 करोड़ भारतीयों को चुनौती दी थी, इसलिए वहीं किया गया जिसके लिए देशवासियों ने उन्हें प्रधान सेवक की जिम्मेदारी दी थी। ऑपरेशन सिंदूर सिर्फ एक सैन्य कार्रवाई नहीं है, यह भारतीयों के संस्कारों और भावनाओं की अभिव्यक्ति है। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी सोमवार को दाहोद में एक जनसभा को संबोधित कर रहे थे। इससे पहले प्रधानमंत्री मोदी ने कई विभागों की लगभग 24 हजार करोड़ रुपये से अधिक के विकास कार्यों का लोकार्पण व शिलान्यास किया। इसके बाद एक जनसभा प्रधानमंत्री मोदी ने कहा कि पहलगाम की आतंकी घटना के बाद तीनों सेनाओं को खुली छूट दी गई और देश के शूर-वीरों ने वह कर दिखाया, जो दुनिया ने पिछले कई दशकों से नहीं देखा था। सीमा पार चल रहे 9 सबसे बड़े आतंकी ठिकानों को ढूंढ निकाला। आर्तकियों ने 22 अप्रैल को जो खेल खेला था, 6 मई को उन्हें मिट्टी में मिला दिया गया। पाकिस्तान की सेना ने जब दुस्सासह दिखाया तो हमारी सेना ने पाकिस्तानी सेना को भी धूल चटा दी। प्रधानमंत्री ने कहा कि बंटवारे के बाद जिस देश का जन्म हुआ उसका एक मात्र लक्ष्य भारत से दुश्मनी है, नफरत है और भारत का नुकसान करना है। जबकि भारत का लक्ष्य अपने यहां की गरीबी को दूर करना, अर्थव्यवस्था को मजबूत करना और विकसित भारत बनाना है। हम इसी दिशा में लगातार काम कर रहे हैं। प्रधानमंत्री ने रेलवे और विकास प्रकल्पों के लोकार्पण और भूमिपूजन के बाद आयोजित गुजरात के आदिवासी पट्टे उमरगाम से अंबाजी में आए बदलाव का उल्लेख किया। उन्होंने कहा कि एक समय ऐसा था जब गुजरात के आदिवासी पट्टे में 12वीं कक्षा तक का एक भी स्कूल नहीं था, लेकिन आज स्थिति पूरी तरह से बदल गई है। उन्होंने गुजरात के लोगों से स्वदेशी अपनाने की अपील की। सरकार का मूल उद्देश्य है कि जो भी क्षेत्र विकास में पीछे छूट गए हैं, उन्हें प्राथमिकता के आधार पर विकास किया जाएगा। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने कहा कि आज 26 मई का दिन है, वर्ष 2014 में आज के ही दिन हमने पहली बार प्रधानमंत्री के तौर पर शपथ ली थी। इस दौरान देश ने वह फैसले लिए जो अकल्पनीय है, अभूतपूर्व है। इन वर्षों में देश ने दशकों पुरानी बेड़ियों को तोड़ा है। देश हर सेक्टर में आगे बढ़ा है। प्रधानमंत्री ने कहा कि आज हम 140 करोड़ भारतीय मिलकर अपने देश को विकसित भारत बनाने के लिए जी-जान से जुटे हैं। देश की तरक्की के लिए जो कुछ भी चाहिए वह हम भारत में ही बनाए। यह आज के समय की मांग है। प्रधानमंत्री ने कहा कि भारत आज तेज गति से मैनुफैक्चरिंग की दुनिया में आगे बढ़ रहा है। आज हम स्मार्ट फोन से लेकर गाड़ियां, सेना के सामान, दवाएं दुनिया के देशों में निर्यात कर रहे हैं। आज भारत रेल मेट्रो, के लिए जरूरी टेक्नोलॉजी खुद बनाता भी है और दुनिया में एक्सपोर्ट भी कर रहा है। दाहोद इसका जीता-जाता उदाहरण है। इसमें सबसे शानदार दाहोद के इलेक्ट्रिक लोकोमोटिव फैक्टरी है। तीन साल पहले इसका शिलान्यास किया था। आज तीन साल बाद इस फैक्ट्री में पहला इलेक्ट्रोमोटिव बनकर तैयार हो गया। यह गुजरात और देश के लिए गर्व की बात है। प्रधानमंत्री ने कहा कि गुजरात के शत-प्रतिशत रेल नेटवर्क का बिजलीकरण पूरा होना भी एक बड़ी उपलब्धि है। दाहोद के साथ अपने संबंधों की चर्चा कर प्रधानमंत्री ने कहा कि उनका दाहोद के साथ रिश्ता राजनीति में आने के बाद नहीं बना है, बल्कि यह लगभग 70 साल पुराना है। जब उन्हें दो-दो, तीन-तीन पीढ़ियों के साथ काम करने का अवसर मिला। उन्होंने कहा कि आज वे लगभग 20 साल बाद परेल गए, तो पूरा परेल बदल चुका है। उस समय परेल में साथियों के साथ घर पर शाम को रोटी खाकर वापस आते थे। उन्होंने कहा कि दाहोद के बारे में उन्होंने जो सपना देखा है, वह आंख के सामने साकार होते देखने का सौभाग्य मिला है। हिन्दुस्थान में आदिवासी जिला किस तरह विकास हो, इसका मॉडल दाहोद बना है। रेलवे में किस गति से विकास हुआ है, यह भी उदाहरण है। देश में लगभग 70 रूट पर आज वंदे भारत ट्रेन चल रहा है। आज से अहमदाबाद से वेरावल जाने का भी वंदे भारत से जाने का रास्ता सुगम हो गया है। प्रधानमंत्री ने कहा कि अब नई टेक्नोलॉजी देश की युवा पीढ़ी भारत में तैयार कर रही है। कोच, लोकोमोटिव पहले विदेश से लाना पड़ता था, आज भारत रेलवे के साथ जुड़े कई चीजों को बनाकर दुनिया में अहम निर्यातक बन गया है। ऑस्ट्रेलिया आदि देशों को भारत में बने कोच निर्यात हो रहे हैं। मैक्सिको, स्पेन, जर्मनी, इटली आदि देशों में रेलवे के छोटे-बड़े उपकरण निर्यात हो रहे हैं। यह काम एमएसएमई बना रहे हैं। प्रधानमंत्री ने कहा कि मेड इन इंडिया लोकोमोटिव-इंजन भारत कई देशों में निर्यात कर रहा है। मेड इन इंडिया जिस गति से विकास कर रहा है, भारत गर्व से सिर ऊंचा कर रहा है। उन्होंने लोगों से विदेशी सामान के इस्तेमाल बंद करने का आह्वान किया। गणपति में छोटी आंख वाली गणपति बाहर से मंगवाते हैं, यह बंद होना चाहिए। जब रेलवे मजबूत होगी तो सुविधा भी बढ़ेगी, इसका लाभ उद्योग, खेती, विद्यार्थी और महिलाओं को लाभ होगा।

शिक्षा में उत्तर प्रदेश का मॉडल बना उदाहरणः सीएम योगी

लोकभवन सभागार में आयोजित कार्यक्रम के दौरान 3300 करोड़ रुपये की परियोजनाओं का सीएम योगी ने शुभारंभ किया

लखनऊ, संवाददाता। आयोजित राष्ट्रीय जनतांत्रिक गठबंधन (एनडीए) शासित राज्यों के मुख्यमंत्रियों की बैठक में उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने माध्यमिक शिक्षा के क्षेत्र में प्रदेश सरकार की क्रांतिकारी पहल प्रोजेक्ट अलंकार का प्रभावशाली प्रस्तुतिकरण किया। मुख्यमंत्री ने बताया कि यह परियोजना प्रदेश के राजकीय और सहायता प्राप्त माध्यमिक विद्यालयों में आधारभूत अवस्थापना का समग्र कायाकल्प करते हुए उन्हें सुरक्षित, स्वच्छ, आधुनिक और प्रेरक शिक्षण संस्थानों में रूपांतरित करने के उद्देश्य से शुरू की गई है।सीएम योगी की इस प्रस्तुति को सभी मुख्यमंत्रियों ने गंभीरता से सुना और उत्तर प्रदेश की इस अभिनव योजना की मुक्तकंठ से सराहना की। कई राज्यों ने इस मॉडल को अपने यहां लागू करने की रुचि भी जताई। मुख्यमंत्री ने स्पष्ट किया कि यह केवल निर्माण कार्य नहीं, बल्कि विद्यार्थियों के आत्मविश्वास को पुनर्जीवित करने, शिक्षा को गरिमा देने और विद्यालयों को प्रेरणा के केंद्र बनाने की एक समग्र कोशिश है।योगी आदित्यनाथ ने बताया कि प्रदेश सरकार ने न सिर्फ राजकीय इंटर कॉलेजों बल्कि हर जिले के ऐतिहासिक और प्रभावशाली अनुदानित विद्यालयों को भी इस योजना में शामिल किया है। वर्षों से उपेक्षित इन विद्यालयों में आधुनिक शिक्षा की राह में सबसे बड़ी बाधा उनकी जर्जर अवस्थापना थी, जिसे सुधारने की दिशा में सरकार ने निर्णायक कदम उठाए हैं।परियोजना के प्रथम चरण में 439 सहायता प्राप्त विद्यालयों को 204.3 करोड़ रुपये की स्वीकृति प्रदान की गई, जिससे 4.3 लाख से अधिक छात्र लाभान्वित हो रहे हैं। संस्कृत शिक्षा के क्षेत्र में भी यह योजना सक्रिय है, जहां प्रदेश के 567 सहायता प्राप्त संस्कृत विद्यालयों में अवस्थापना सुधार का कार्य प्रगति पर है। इनमें से 141 विद्यालयों को प्राथमिकता दी गई और 14.94 करोड़ रुपये व्यय किए गए।प्रोजेक्ट अलंकार के अंतर्गत प्रदेश के 2,441 राजकीय और 4,512 सहायता प्राप्त माध्यमिक विद्यालयों को 35 निर्धारित मापदण्डों के अनुरूप सशक्त किया जा रहा है।

मोदी मार्गदर्शन में शिक्षा, स्वास्थ्य, रेल , सड़क से जुड़े इंफ्रास्ट्रक्चर हो रहे मजबूत : धामी

देहरादून। मुख्यमंत्री पुष्कर सिंह धामी ने सोमवार को कोटद्वार क्षेत्र में चिल्लरखाल-पाखरो मोटर मार्ग पर मालन पुल के सुरक्षात्मक कार्य सहित कुल सात निर्माण कार्यों का वर्चुअल माध्यम से लोकार्पण किया। इस अवसर पर मुख्यमंत्री ने कहा कि मालन सेतु का पुनर्निर्माण राज्य सरकार की दूरस्थ क्षेत्रों के आधारभूत ढांचे को मजबूत करने की प्रतिबद्धता का प्रतीक है। इससे कोटद्वार व आस-पास के ग्रामीण क्षेत्रों में आवागमन सुगम होगा और आर्थिक गतिविधियों को गति मिलेगी। मुख्यमंत्री ने कहा कि प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के मार्गदर्शन में राज्य में शिक्षा, स्वास्थ्य, पेयजल, सड़क, रेल एवं हवाई कनेक्टिविटी से जुड़े इंफ्रास्ट्रक्चर को मजबूत किया जा रहा है। इसी क्रम में कोटद्वार के विकास के लिये भी कई महत्वपूर्ण योजनाओं पर काम किया जा रहा है। उन्होंने कहा कि कोटद्वार-पौड़ी-श्रीनगर सड़क को भी अब डबल लेन में अपग्रेड किया जा रहा है, जिससे यात्रियों को सुविधा मिलेगी और आर्थिक गतिविधियों को गति मिलेगी।

कार्यक्रम में मौजूद विधानसभा अध्यक्ष व स्थानीय विधायक ऋतु खंडूडी भूषण ने कहा कि कोटद्वार में मुख्यमंत्री के सहयोग से लगातार विकास कार्य कराये जा रहे हैं। क्षतिग्रस्त मालन पुल का कार्य भी तेजी से पूरा किया गया है। इस अवसर पर नगर निगम कोटद्वार मेयर शैलेंद्र सिंह रावत, भाजपा जिलाध्यक्ष राज गौरव नौटियाल, जिलाधिकारी डॉ. आशीष चौहान उपस्थित थे।26 करोड़ 75 लाख 95 हजार की लागत से चिल्लरखाल-सिगड्डी-कोटद्वार-पाखरो मोटर मार्ग पर मोटाढाक के निकट मालन नदी पर 325 मीटर स्पान के पूर्व निर्मित आरसीसी वॉयडेड स्लैब सेतु का सुरक्षात्मक कार्य।4 करोड़ 50 लाख 19 हजार की लागत से चिल्लरखाल-पाखरो मोटर मार्ग के 12 किलोमीटर में स्थित 385 मीटर स्पान के सुखरौं पुल का सुरक्षात्मक कार्य।

न्याय के लिए एक नया संकल्प था ऑपरेशन सिंदूर : बांसुरी

नई दिल्ली। शिवसेना सांसद श्रीकांत शिंदे के नेतृत्व में सर्वदलीय प्रतिनिधिमंडल की सदस्य भाजपा सांसद बांसुरी स्वराज ने ऑपरेशन सिंदूर के उद्देश्य की पुष्टि की और आतंकवाद के खिलाफ भारत की नीति में प्रतिमान बदलाव का वर्णन किया। एएनआई से बात करते हुए स्वराज ने कहा कि ऑपरेशन सिंदूर न केवल एक सैन्य अभियान था, बल्कि न्याय के लिए एक नया संकल्प था जिसे भारत ने दुनिया के सामने पेश किया है। आज के मन की बात एपिसोड में भी प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने मेड-इन-इंडिया तकनीक और मेड-इन-इंडिया हथियारों के बारे में बात की।बांसुरी स्वराज ने कहा कि आतंकवाद के संबंध में भारत की नीति में आमूलचूल परिवर्तन हुआ है, जहां यह कहा गया है कि आतंक और वार्ता एक साथ नहीं चल सकते, खून और पानी एक साथ नहीं बह सकते, व्यापार और आतंकवाद एक साथ नहीं हो सकते। उन्होंने कहा कि आतंकवाद के खिलाफ वैश्विक युद्ध में भारत ने दुनिया के सामने एक नया उदाहरण पेश किया है। इस संबंध में सर्वदलीय प्रतिनिधिमंडल पहले यूएई गया और अब कांगो, लाइबेरिया और सिएरा लियोन जैसे विभिन्न पश्चिमी अफ्रीकी देशों में गया।

खेती-किसानी देश की अर्थव्यवस्था की नींव, कृषि विकास से ही आएगी समृद्धि : उप राष्ट्रपति

भोपाल। उप राष्ट्रपति जगदीप धनखड़ ने कहा कि खेती-किसानी देश की अर्थव्यवस्था की नींव है। यह हमारी प्रगति का मूल आधार है। कृषि के क्षेत्र में विकास और नित नए नवाचार जरूरी हैं, इससे कृषि के विकास से ही देश में समृद्धि आएगी। देश का उदर-पोषण करने वाले अन्नदाता की खुशहाली में ही हमारे देश की खुशहाली सन्निहित है। उप राष्ट्रपति धनखड़ सोमवार को नरसिंहपुर जिला मुख्यालय में कृषि उद्योग समागम-2025 के शुभारंभ कार्यक्रम को संबोधित कर रहे थे। उपराष्ट्रपति जगदीप धनखड़, राज्यपाल मंगुभाई पटेल एवं मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने दीप प्रज्ज्वलन, कन्या पूजन एवं भगवान बलराम की मूर्ति पर पुष्पांजलि अर्पित कर 26 से 28 मई तक चलने वाले तीन दिवसीय कृषि-उद्योग समागम 2025 का विधिवत् शुभारंभ किया। इस अवसर पर डॉ. सुदेश जगदीप धनखड़ विशेष रूप से उपस्थित थीं। उप राष्ट्रपति ने कृषि उद्योग समागम के लिये मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव को बधाई देते हुए कहा कि उनकी इस पहल का अन्य राज्यों को भी अनुसरण करना चाहिए। किसान हमारे अन्नदाता हैं। अन्नदाताओं का अभिनंदन करते हुए कहा कि किसान भारत की अर्थव्यवस्था की रीढ़ है। इनकी जितनी प्रशंसा की जाए कम है। उन्होंने कहा कि मुख्यमंत्री डॉ. यादव बेहद कर्मठ और कार्यशील है। कोई ऐसा दिन नहीं रहता, जब वे गांव, गरीब और किसान की चिंता न करें। मध्य प्रदेश सरकार ने गांव-किसान और उद्योग को जोड़ने की अभिनव पहल शुरू की है। उन्होंने कृषि-उद्योग समागम के आयोजन के लिए मुख्यमंत्री डॉ. यादव को बधाई दी। उन्होंने कहा कि उम्मीद है कि देश का हर राज्य मध्य प्रदेश की इस पहल का अनुकरण करेगा। उन्होंने बताया कि केंद्रीय कृषि मंत्रालय द्वारा भी 29 मई से 12 जून तक नई दिल्ली में कृषि आधारित एक वृहद आयोजन किया जा रहा है उप राष्ट्रपति ने कहा कि विकसित भारत का रास्ता गांव और किसान के खेत से निकलता है। देश में विकसित भारत के लिए महायज्ञ चल रहा है इसमें सबसे बड़ी आहूति किसान भाइयों की ही है।

पुलिस के साथ मुठभेड़ में नक्सली कमांडर मनीष यादव ढेर

लातेहार। झारखंड के लातेहार में पुलिस को बड़ी कामयाबी हाथ लगी है। लातेहार पुलिस ने 5 लाख रुपए के इनामी नक्सली मनीष यादव को मार गिराया है। इसके अलावा, 10 लाख रुपए के इनामी नक्सली कुंदन खेरवार को भी गिरफ्तार किया है। यह मुठभेड़ महुआडांड़ थाना क्षेत्र के करमखाड़ और दौना के बीच हुई। जानकारी के अनुसार, लातेहार पुलिस को सूचना मिली थी कि नक्सली मनीष यादव अपने दस्ते के साथ महुआडांड़ थाना क्षेत्र के दौना और करमखाड़ के बीच जंगल में मौजूद है। इसके बाद नक्सलियों के खिलाफ कार्रवाई को लेकर टीम गठित की गई और पुलिस ने नक्सलियों को पकड़ने के लिए इलाके की घेराबंदी की। इस दौरान नक्सलियों ने पुलिस पर फायरिंग शुरू कर दी। जवाबी कार्रवाई में नक्सली कमांडर मनीष यादव को मार गिराया गया। यह मुठभेड़ रविवार देर रात शुरू हुई थी, जो सोमवार सुबह तक जारी रही। इस कार्रवाई के दौरान पुलिस ने 10 लाख रुपए का इनामी नक्सली कुंदन खेरवार को भी गिरफ्तार कर लिया। पलामू के डीआईजी वाईएस रमेश ने नक्सली के मारे जाने की पुष्टि की है।

राज्य सभा की 8 सीटों के द्विवार्षिक चुनाव 19 जून को

नयी दिल्ली। चुनाव आयोग ने राज्य सभा के लिए असम से उन दो तथा तमिलनाडु से उन छह सीटों के लिए 19 जून को चुनाव कराने की सोमवार को घोषणा की जिनके लिए निर्वाचित वर्तमान सदस्यों का कार्यकाल जून-जुलाई में पूरा हो रहा है। इन सीटों के चुनाव के लिए अधिसूचना दो जून को जारी की जायेगी आयोग की एक विज्ञप्ति के अनुसार इस सीटों के लिए निर्वाचित सदस्यों का वर्तमान कार्यकाल आगामी 14 जून और 24 जुलाई को पूरा होने जा रहा है। चुनाव आयोग द्वारा जारी कार्यक्रम के अनुसार इन सीटों के लिए नामांकन पत्र सोमवार नौ जून तक भरे जा सकेंगे। नामांकन पत्रों की जांच 10 जून को की जायेगी। नाम वापस लेने की अंतिम तिथि 12 जून रखी गयी है। इन सीटों के लिये मतदान 19 जून को पूर्वाह्न नौ बजे से अपराह्न चार बजे तक कराया जायेगा। मतों की गिनती मतदान पूरा होने के एक घंटे बाद उसी दिन शाम पांच बजे की जायेगी। आयोग ने कहा है कि चुनाव प्रक्रिया 23 जून तक सम्पन्न करा ली जायेगी
असम से राज्य सभा के सदस्य मिशन रंजन दास और बीरेन्द्र (दोनों भाजपा) का कार्यकाल 14 जून को पूरा हो रहा है।

वायरल हुए समाचार पर भड़के भू माफिया, वादी के घर जाकर किया तांडव, कहा ...

मुकदमा वापस लो वरना सबको जेल भेज देंगे

उन्नाव, संवाददाता। विगत दिन भू माफियाओं व राजस्व परिषद के कुछ भ्रष्ट अधिकारियो द्वारा एक जूट हो कैसे सरकारी भूमि को हड़प्पा जाता है और आसंक्रमणी भूमि के दस्तावेज को आधार मानकर की गई दाखिल खारिज व जो भूमि सरकार के खाते में नियम अनुसार व कानून के आधार पर जानी थी और तो और सक्षम न्यायालय द्वारा उक्त भूमि पर स्टे के चलते विक्रय पत्र लिखा जाना और उसकी भी दाखिल खारिज हो जाना क खेल वायरल हुए समाचार में उल्लेख किया गया था जिस पर भूमाफियाओं द्वारा समाचार का संज्ञान लेते हुए आनन-फानन उक्त भूमि संबंधित विवाद जो श्रीमान उप जिलाधिकारी महोदय सदर उन्नाव के यहां मुकदमा दायर करता के घर पहुंच घर में मिली अकेली महिला के सात उतंदता का तांडव खेल मोहम्मद अख्तर निवासी ग्राम थाना जो हाफिज नाम से विख्यात है मोहम्मद खालिद व मुलुकराज यादव सहित आदि लोगों द्वारा उसको डरा धमका कर ये कहा गया कि अपना मुकदमा वापस ले लो वरना तुम लोगों के ऊपर इतने फर्जी मुकदमे लिख दिए जाएंगे थाना माखी में की जिंदगी भर जेल में बैठे रहोगे जिसके चलते महिला बेहोश हो गई थी बाद में आए उसके पति रवि शंकर को जब उक्त विषय की जानकारी हुई तो वहां ग्रामीणों व पीड़ित पक्ष द्वारा रात्रि में 112 डायल कर पुलिस को अवगत कराया जिस पर पहुंची पुलिस ने छानबीनकर निर्भय होकर रहने का आश्वासन दिया और कहा कि कल सुबह थाने जाकर उक्त गुंडों के खिलाफ प्रार्थना पत्र दे हम लोग करवाई कर गुंडो को सबक सिखाएंगे जिसके चलते पीड़ित पक्ष द्वारा थाने पहुंच बीती घटना बता मोहम्मद अख्तर (हाफिज), मोहम्मद खालिद, मुल्क राज यादव आदि के खिलाफ प्रार्थना पत्र दे न्याय की गुहार लगाई आरोपी द्वारा बताया गया कि इन भूमाफियाओं के ऊपर पहले से कई मुकदमे कायम है लेकिन इनको पुलिस पकड़ती नहीं है यह लोग कई लोग कई लोगों की जमीन हड़प चुके हैं अब हमारे जमीन के पीछे भी पड़े हैं और रही बात जो यह फर्जी बैनामा 2007 का लेकर घूम रहे हैं जिसमें मुन्नी, अख्तर की पत्नी शमा वह साधना सिंह उल्लेख है इनको हमारे पिताजी ने कभी जमीन बेची ही नहीं जबकि इस जमीन का बैनामा हमारे पिताजी द्वारा सन 2020 में जब यह भूमि असंक्रमणि से संक्रमणी भूमि भूमि दर्ज हुई थी और इस पर कई लाख रुपया बैंक का कर्ज भी था जो हमारे पिताजी द्वारा सन 2014 में लिया गया था जिसके चलते हमारे पिता ने सन 2020 में उक्त भूमि को विजय कांति, चांदनी, कुंती को रजिस्टर्ड बैनामा भी किया था और विजय कांति द्वारा उक्त भूमि पर जो बैंक का लाखों रुपए कर्ज था वह भी अपने खाते से बैंक को अदा किया गया था इसलिए हम लोग भी चाहते हैं कि यह भूमि हमारे पिताजी ने जिसके हाथ बेचा है उसी को मिले और जो यह लोग लिखा पड़ी लिए घूम रहे हैं जिसके आधार पर दाखिल खारिज भी कराई वह हमारे पिताजी के संज्ञान में नहीं था कभी उनसे धोखे में लिखी गई और वैसे भी उसे समय वह भूमि सरकार की थी तो हमारे पिताजी को बेचने का कोई प्रश्न ही नहीं उठाता जिसका मुकदमा हमारे पिताजी द्वारा सी जे एम कोर्ट में दायर भी किया था लेकिन हमारे पिता की मुकदमा फैसला के बीच में ही मौत हो गई थी

डीजीएमओ के अलावा भारत-पाक के बीच कोई बातचीत नहीं: जयशंकर

नई दिल्ली, (एजेंसी)। विदेश मंत्री एस जयशंकर ने सोमवार को भारत के ऑपरेशन सिंदूर को लेकर चल रहे विवाद को संबोधित करते हुए कांग्रेस पार्टी के उन आरोपों का खंडन किया कि उन्होंने सैन्य हमलों से पहले पाकिस्तान को सूचित किया था। संसद में सलाहकार समिति की बैठक के दौरान, जयशंकर ने आरोपों को बेईमानी और घटनाओं का गलत चित्रण करार दिया, जबकि सांसदों द्वारा उठाए गए प्रमुख मुद्दों पर स्पष्टता प्रदान की, जिसमें संयुक्त राज्य अमेरिका की भूमिका, सिंधु जल संधि और ऑपरेशन सिंदूर से संबंधित विवरण से संबंधित चिंताएं शामिल थीं।बैठक में मौजूद सूत्रों के अनुसार, जयशंकर ने इस बात पर जोर दिया कि भारत की सैन्य कार्रवाई ने सटीक तरीके से आतंकी ढांचे को निशाना बनाकर पाकिस्तान के मनोबल को सफलतापूर्वक प्रभावित किया है। सांसदों के सवालों का जवाब देते हुए, उन्होंने यह भी स्पष्ट किया कि ऑपरेशन पूरा होने के बाद, भारत के सैन्य संचालन महानिदेशक ने पाकिस्तान के डीजीएमओ को कार्रवाई के बारे में सूचित किया, न कि कार्रवाई शुरू होने से पहले, जैसा कि विपक्ष ने गलत तरीके से कहा था। यह विवाद तब शुरू हुआ जब कांग्रेस नेता राहुल गांधी ने जयशंकर पर सार्वजनिक रूप से यह स्वीकार करने का आरोप लगाया कि भारत ने पाकिस्तान को ऑपरेशन के बारे में पहले ही सूचित कर दिया था।
गांधी ने इस तरह की संवेदनशील जानकारी साझा करने से होने वाले संभावित नुकसान के बारे में चिंता जताई, उन्होंने सवाल किया कि इस संचार के कारण कितने भारतीय वायु सेना के विमान खो गए। गांधी ने एक वीडियो क्लिप का भी हवाला दिया जिसमें जयशंकर ने कथित तौर पर कहा कि ऑपरेशन की शुरुआत में हमने पाकिस्तान को एक संदेश भेजा था, जिसमें कहा गया था, %हम आतंकवादी ढांचे पर हमला कर रहे हैं और हम सेना पर हमला नहीं कर रहे हैं। सेना के पास इस प्रक्रिया में हस्तक्षेप न करने और बाहर खड़े होने का विकल्प है।

लोकतंत्र के लिए संघर्ष जरूरी

इस तथ्य के बावजूद कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने पहलगाम में बैसरन घाटी में हुई भीषण हत्याओं पर भारत की संभावित प्रतिक्रिया पर चर्चा करने के लिए संसद में बुलाई गयी दो सर्वदलीय बैठकों से स्वयं को दूर रखने का फैसला किया, जिसका असली कारण तो केवल उन्हें ही पता है, पर इन बैठकों में विभिन्न राजनीतिक दलों के नेताओं ने भाग लिया। सभी उपस्थित दलों के नेताओं ने लश्कर-ए-तैयबा (एलईटी), जो कि संबंधित संयुक्त राष्ट्र एजेंसी द्वारा नामित एक आतंकवादी संगठन है, से जुड़े आतंकवादियों द्वारा की गयी आतंकी हत्याओं की स्पष्ट रूप से निंदा की। उन्होंने प्रतिक्रिया में उचित कदम उठाने में सरकार को अपना समर्थन भी दिया। युद्ध विराम की घोषणा तक यह आम सहमति बनी रही। सभी पक्षों ने सैन्य मुठभेड़ समाप्त होने तक कोई भी सवाल उठाने से परहेज किया। यह इसके बावजूद कि अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप की एकतरफा घोषणा कि उन्होंने और उनके प्रशासन ने युद्ध विराम के निर्णय में मध्यस्थता की और उसे आगे बढ़ाया। फिर उसके बाद ट्रम्प ने यह भी दावा किया कि भारत और पाकिस्तान दोनों को व्यापार परिणामों की धमकी के तहत युद्ध विराम के लिए दबाव डाला गया था। वह न केवल आश्चर्यजनक था, बल्कि शिमला समझौते में निहित सिद्धांतों का उल्लंघन भी था। बातचीत के माध्यम से समाधान के परिणामस्वरूप हुए उस समझौते ने दोनों देशों को चर्चा के माध्यम से सभी विवादास्पद मुद्दों को द्विपक्षीय रूप से हल करने के लिए प्रतिबद्ध किया था। इसके बावजूद, पाकिस्तान ने लगातार कश्मीर मुद्दे का अंतरराष्ट्रीयकरण करने का प्रयास किया है। यदि राष्ट्रपति ट्रंप के दावों को सच मान लिया जाये, तो उनका अर्थ होगा कि कश्मीर मुद्दे का वास्तव में अंतरराष्ट्रीयकरण हो चुका है - एक निहितार्थ जो रणनीतिक और कूटनीतिक परिणामों से भरा हुआ है। हालांकि भारतीय अधिकारियों और सरकार ने दावा किया है कि युद्ध विराम द्विपक्षीय चर्चाओं का परिणाम था, इन दावों की सत्यता के बारे में काफी भ्रम, यदि वास्तविक संदेह नहीं हो तो भी, बना हुआ है। इस प्रमुख मुद्दे के अलावा, अन्य मामले भी थे जिनके लिए आधिकारिक स्पष्टीकरण की आवश्यकता थी -विशेष रूप से सैन्य मुठभेड़ से जुड़ी रिपोर्टों के संबंध में। मुख्यधारा के मीडिया द्वारा विचित्र और अपुष्ट दावों के प्रचार को देखते हुए यह विशेष रूप से आवश्यक हो गया था। इनमें से कुछ रिपोर्ट, विशेष रूप से 8 मई की रात को प्रसारित की गयी, जो इतनी अपमानजनक थीं कि भारतीय मीडिया को अंतरराष्ट्रीय समुदाय के अधिकांश लोगों द्वारा कड़ी आलोचना का सामना करना पड़ा। इन गलत बयानों ने अंततरू हमारे राष्ट्रीय हितों को चोट पहुंचाई। इस प्रकार, युद्ध विराम के बाद, संसद के पटल पर सरकार द्वारा एक प्रामाणिक बयान एक तत्काल आवश्यकता बन गई।

राहुल के पुंछ दौरे के बाद मोदी से उनकी सीधी तुलना!

जिन्हें उन्होंने भरने का वादा किया था। पूरे देश को जोड़ने वाली दो भारत यात्राएं की। लेकिन हमने उपर ही कहा कि नहीं लिख रहे। अगर खुद महसूस नहीं कर रहे तो लिखने से भी फायदा क्या? अभी तो एक महीना हुआ। पहलगाम की घटना को हुए। अगर वही भूल गए तो 11 साल का लेखा-जोखा लिखने से फायदा क्या? दोनों विदेश में थे। राहुल अमेरिका से दौरा छोड़कर लौटे। सीधे सीडब्ल्यूसी की मीटिंग में। पहलगाम में मारे गए पर्यटकों के लिए शोक प्रस्ताव, मौन।

शकील अख्तर

क्या यह बात सही साबित हो रही है कि यथा प्रजा तथा राजा! सिद्धान्तरू यह बात नहीं मानी जाना चाहिए। एक तो राजशाही की कहावत है। कर्मो के फल के सिद्धांत से बनी है। दूसरे शासक से ज्यादा जनता को आरोपित करती है। लोकतंत्र में जनता ही सर्वोच्च होती है। लेकिन आज जो दिख रहा है वह ऐसा लगता है कि जैसे हम लोग ही, जनता ही राहुल के योग्य नहीं हैं!हम इसी को डिजर्व करते हैं जो पहलगाम के बाद हो रहा है। 11 साल में बड़ी-बड़ी घटनाएं हुई। मगर कोई बड़ी नाराजगी, गुस्से, आक्रोश की लहर नहीं दिखी। बड़ी घटनाओं से आशय उनसे नहीं जिसे मोदी महत्व ही नहीं देते। जैसे नोटबंदी, कोरोना में सरकार का हाथ खड़े करना या बेरोजगारी, महंगाई, सरकारी चिकित्सा, शिक्षा खतम करना और दूसरे तमाम आर्थिक रोजमर्रा की जिन्दगी से जुड़े सवाल। बड़े मामले वह जो मोदी के कोर इशु राष्ट्रवाद से जुड़े हैं। जिस राष्ट्रवाद के नाम पर बड़े-बड़े शब्दों का इस्तेमाल करके, काल्पनिक आशंकाएं दिखाकर वे हर बार वोट लेते हैं। भैंस छीन ले जाने से लेकर मंगलसूत्र छीन ले जाने तक। और वह मंगलसूत्र उन्हीं के राज में एक साथ 26 महिलाओं का छिन गया। पहलगाम। 370 हटाने से आंतकवाद खत्म हो गया है और उससे पहले नोटबंदी से हो गया था। बहुत सारी बातें। लोगों को खुद याद करना चाहिए। तो ऐसी बड़ी बातें कोई सुरक्षा कवच तो बनाती नहीं केवल लोगों के मन में मोदी की बड़ी और बड़ी शक्ति को ही स्थापित करने की कोशिश करती हैं। मोदी का सारा जोर ऐसी ही बातों पर

होता है। अभी आपने देखा गरम सिंदूर अपने लहू में बता दिया! तो यह जो कोर इशु है राष्ट्रवाद वह जब छद्म राष्ट्रवाद में भी परिवर्तित हो जाता है तब भी जनता की आंख नहीं खुलना चिन्ता की बात है। और पहलगाम ही घटना नहीं है। पहलगाम तो शुरूआत थी। उसके बाद अचानक सीजफायर सबसे बड़ा झटका थी। वाकई इतना बड़ा कि 11 साल में बने अंध भक्त भी हिल गए। बीजेपी और आरएसएस में भी बैचेनी फैल गई। अमेरिका की मध्यस्थता नहीं। सीधा आदेश। प्रेसिडेन्ट ट्रंप यह कहते हुए दिखे कि मैंने दोनों से कह दिया कि युद्ध बंद करो। नहीं तो मैं बिजनेस बंद कर दूंगा। स्टाप इट . . . स्टाप इट साफ कहते दिखे। दोनों को एक समान मानकर। एक बार भी आतंकवादी नहीं कहा। अब तो लोगों ने शायद गिनना भी बंद कर दिया। लास्ट हमने जो देखा वह 9 बार बता रहे थे कि ट्रंप ने बोला। और हमारे प्रधानमंत्री ने एक बार भी विरोध नहीं किया कि यह किस भाषा में बोल रहे हैं। पाकिस्तान आतंकवादी भेज रहा है और आप उसे और हमें एक समान बता रहे हैं। नहीं बोले मोदी! तो क्या फिर भी लोगों के मन में सवाल नहीं उठता कि यह कैसा राष्ट्रवाद है जो राष्ट्र पर हमले, राष्ट्र के अपमान पर भी कुछ नहीं बोलना? गलवान में क्या हुआ था? चीन अंदर घुसा हमारे 20 जवानों को शहीद किया और वहीं कब्जा करके बैठ गया। और हमारे प्रधानमंत्री ने क्या कहा कि न कोई घुसा है और न कोई है! लद्दाख से लेकर अरुणाचल तक वह अंदर बैठा हुआ है। सड़कें बनाना, पक्के निर्माण करना, गांव बसाना, हमारी जगहों के नाम बदलना क्या नहीं कर रहा है? लेकिन मोदी मौन हैं! यह तो हुआ एक पक्ष कि कैसे मोदी अपने राष्ट्रवाद के मुख्य नारे या उनकी भारी शब्दावली में तो अपने मुख्य संकल्प की रक्षा भी नहीं कर पा रहे। शब्दों से होती भी नहीं है! नहीं तो डिक्शनरी ही सबसे बड़ा साहित्य या वीर रस का महाकाव्य होता! दूसरी तरफ नेता प्रतिपक्ष राहुल गांधी हैं। हर जगह अपनी जिम्मेदारी निभाते हुए। और सबसे बड़ी बात उपहास, अपमान के बाद भी। कृष्ण के इस उपदेश को तो लगता है उन्होंने ही सबसे ज्यादा आत्मसात किया है- कर्मण्येवाधिकारस्ते मा फलेषु कदाचना ! फल की इच्छा से दूर। और दूसरी तरफ देखिए यहां अभी तक पता नहीं चला है कि पहलगाम के आतंकवादी कौन थे लेकिन आपरेशन सिंदूर के नाम पर वोट मांगना शुरू कर दिए। 2019 के लोकसभा चुनाव से पहले पुलवामा में हमारे 46 जवान कैसे मारे गए थे यह भी आज तक पता नहीं चला मगर उसके नाम पर भी वोट मांग लिए गए थे। लेटेस्ट (नवीनतम) अभी राहुल गांधी पुंछ गए। पाकिस्तान ने यहां नागिरक क्षेत्रों पर भारी गोलाबारी की थी। 16 लोग मारे गए थे। 100 के करीब घायल हुए थे। मकान खंडहरों में बदल गए। गुरुद्वारे तक को नहीं छोड़ा। राहुल हर जगह गए। गुरुद्वारे जहां एक बुजुर्ग सरदार जी राहुल से कह रहे हैं कि मोदी यहां नहीं आए। पुंछ का नाम तक नहीं लिया। आपसे हमें बड़ी उम्मीदें हैं। देश को भी हैं। 11 साल की जाने कितनी घटनाएं हैं जहां राहुल लोगों के दुरूख दर्द में शामिल होने पहुंचे। नहीं लिख रहे। जनता को खुद याद करना चाहिए। और जनता को अगर याद नहीं रहता है तो फिर वही बात कि वह अच्छे और बुरे में फर्क ही नहीं करती है। उसे बहलाने वाला कि अच्छे दिन आएंगे, नारी पर वार नहीं होगा, 15 लाख खाते में आएंगे, इतने करोड़ रोजगार हर साल मिलेंगे, मेरे शासन में जन्म लेना सम्मान जैसी बातें ही पसंद है! यह सवाल पूछने वाला नहीं कि इतनी सरकारी नौकरियां खाली पड़ी हैं युवाओं को क्यों नहीं दी जा रहीं? करीब दस लाख तो केन्द्र सरकार ने 2023 में लोकसभा में माना था कि पद रिक्त पड़े हैं। और 2024 में राहुल ने कहा 30 लाख पद।

न्याय की भाषा में बदलाव की दस्तक

उमेश चतुर्वेदी

बीते 14 मई को राष्ट्रपति भवन में हिंदी के प्रयोग ने एक नया इतिहास रच दिया। देश के 52वें मुख्य न्यायाधीश के रूप में न्यायमूर्ति भूषण रामकृष्ण गवई का शपथ ग्रहण समारोह ऐतिहासिक बन गया। उन्होंने हिंदी में शपथ लेकर एक नई परंपरा की शुरुआत की। अब तक सभी मुख्य न्यायाधीश अंग्रेज़ी में ही शपथ लेते रहे हैं।देश के प्रधानमंत्री, राष्ट्रपति, उपराष्ट्रपति, राज्यों के राज्यपाल और मुख्यमंत्री जैसी प्रमुख हस्तियां पहले से ही हिंदी में शपथ लेती रही हैं, लेकिन न्यायपालिका का सर्वोच्च पद अब तक इससे अछूता था। महाराष्ट्र के विदर्भ क्षेत्र से ताल्लुक रखने वाले न्यायमूर्ति गवई ने हिंदी में शपथ लेकर उस परंपरा को तोड़ा और न्यायपालिका में अब तक उपेक्षित रही हिंदी को सम्मान दिया। उनके इस निर्णय का विभिन्न सामाजिक संगठनों द्वारा स्वागत किया जा रहा है। अपने शपथ ग्रहण में मातृभाषा का प्रयोग कर न्यायमूर्ति गवई ने देश के करोड़ों हिंदी और अन्य भारतीय भाषाओं के प्रेमियों को एक नई उम्मीद से भर दिया है। लोगों को आशा है कि उनके नेतृत्व में न्यायपालिका में हिंदी सहित सभी भारतीय भाषाओं को उचित सम्मान और स्थान प्राप्त होगा। यह विडंबना ही है कि छह वर्ष पूर्व संयुक्त अरब अमीरात (यूएई) की अदालतों में हिंदी में सुनवाई की अनुमति दी जा चुकी है, जबकि भारत की सर्वोच्च न्यायपालिका आज भी अंग्रेज़ी तक ही सीमित है। न्यायमूर्ति गवई से अपेक्षाएं इसलिए भी हैं क्योंकि उनके पद में महत्वपूर्ण अधिकार निहित हैं। मुख्य न्यायाधीश की सहमति के बिना किसी भी उच्च न्यायालय में कार्यवाही की भाषा स्थानीय नहीं बन सकती। संविधान के अनुच्छेद 348(1)(ए) के अनुसार, सुप्रीम कोर्ट और सभी हाईकोर्ट की कार्यवाही अंग्रेज़ी में ही की जाएगी। हालांकि, इसी अनुच्छेद के भाग (2) में यह प्रावधान भी है कि यदि कोई राज्य अपनी राजभाषा में न्यायिक कार्य करना चाहता है, तो राज्यपाल राष्ट्रपति की सहमति प्राप्त कर संबंधित हाईकोर्ट की कार्यवाही में हिंदी या राज्य की अन्य

आधिकारिक भाषा के प्रयोग की अनुमति दे सकता है। राजभाषा अधिनियम, 1963 की धारा 7 में भी इसी तरह का प्रावधान किया गया है। इसके तहत राज्यपाल, राष्ट्रपति की पूर्व सहमति से, उच्च न्यायालय के निर्णय या आदेशों के लिए अंग्रेज़ी के साथ-साथ हिंदी या राज्य की अन्य राजभाषा के प्रयोग को अनुमति दे सकता है। दुर्भाग्यवश, इन संवैधानिक और विधिक प्रावधानों के बावजूद, आज तक इनका उपयोग बहुत सीमित रहा है संविधान के प्रावधानों के तहत हिंदी को 26 जनवरी, 1965 से राजभाषा के तौर पर पूरे देश में कामकाज करने की अनुमति मिलनी थी। लेकिन इसके खिलाफ तीखे विरोध के साथ तमिलनाडु की द्रविड़ राजनीति मैदान में कूद पड़ी थी। हालांकि, जब उसे अहसास हुआ कि गणतंत्र दिवस पर ऐसा करना उचित नहीं होगा तो एक दिन पहले यानी 25 जनवरी को उसने ऐसा किया। राजभाषा को लेकर होते रहे ऐसे विवादों की वजह से राजभाषा नीति पर विचार के लिए मंत्रिमंडल समिति का गठन किया गया। जिसने 21 मई, 1965 की अपनी बैठक में यह तय किया कि हाईकोर्ट में अंग्रेजी के अलावा किसी अन्य भाषा के प्रयोग से संबंधित प्रस्ताव पर देश के मुख्य न्यायाधीश की सहमति प्राप्त की जानी चाहिए। भारतीय भाषा प्रेमियों की नजर में यह प्रावधान भारतीय भाषाओं की न्याय की भाषा बनने की राह में सबसे बड़ी बाधा है। सांविधानिक प्रावधान के अंतर्गत हिंदी में कामकाज की अनुमति सबसे पहले राजस्थान को हासिल हुई, जिसे हिंदी में कार्यवाही की अनुमति 1950 में मिली। इलाहाबाद हाईकोर्ट में हिंदी कार्यवाही की अनुमति 1969 में मिली, जबकि मध्य प्रदेश को 1971 और बिहार को 1972 में मिली। कई राज्य ऐसे हैं, जिन्होंने समय-समय पर अपनी भाषाओं में अपने हाईकोर्ट में कार्यवाही चलाने की अनुमति मांगी, लेकिन उन्हें नाकामी ही मिली। यद्यपि तमाम सांविधानिक प्रावधानों और उनकी बाधा के बावजूद भारतीय भाषा प्रेमियों का उत्साह कम नहीं हुआ। वे भारतीय भाषाओं को न्यायपालिका की भाषा बनाने की मांग करते रहे हैं। इसका असर उच्च न्यायपालिका पर भी पड़ा है। बेशक न्यायिक कार्यवाही भारतीय भाषाओं में नहीं हो रही है, लेकिन फैसलों और न्यायिक कार्यवाही तक आम लोगों की सहज पहुंच बनाने की दिशा न्यायलय आगे बढ़े हैं। इसके तहत कार्यवाही और निर्णयों का अंग्रेजी से क्षेत्रीय भाषाओं में अनुवाद को बढ़ावा दिया जा रहा है। सुप्रीम कोर्ट ने न्यायमूर्ति अभय एस ओका की अध्यक्षता में एआई सहायता प्राप्त कानूनी अनुवाद सलाहकार समिति का गठन किया है। इसके जरिए अब तक 16 भाषाओं में हजारों फैसलों आदि का अनुवाद किया जा रहा है। ओका समिति की तरह सभी हाईकोर्टों ने भी अपने यहां अनुवाद के लिए समितियां बनाई हैं। कानून और न्याय मंत्रालय के अधीन बार काउंसिल ऑफ इंडिया ने देश के पूर्व मुख्य न्यायाधीश न्यायमूर्ति एस.ए. बोबडे की अध्यक्षता में 'भारतीय भाषा समिति' का भी गठन किया है। यह समिति कानूनी सामग्री का क्षेत्रीय भाषाओं में अनुवाद करने के उद्देश्य से सभी भारतीय भाषाओं के लिए एक समान शब्दावली विकसित कर रही है।

ईडी की विश्वसनीयता

यह कोई नई बात नहीं है कि देश की जांच एजेंसियों पर सरकार की आकांक्षाओं के अनुरूप कार्य करने को लेकर विपक्षी राजनीतिक दलों की तरफसे पक्षपात के आरोप लगे हों। सरकारी जांच एजेंसियों को वे विपक्ष के नेताओं को डराने-धमकाने का हथियार बताते रहे हैं। अब इन्हीं चिंताओं और सवालों पर देश की शीर्ष अदालत ने भी मोहर लगाई है। विपक्षी नेता खासकर धनशोधन निरोधक अधिनियम के तहत की जा रही कार्रवाइयों पर रोक लगाने की गुहार लगाते रहे हैं। उनका आरोप रहा है कि प्रवर्तन निदेशालय सरकार के हितों की पूर्ति के लिये दुराग्रह से कार्रवाई करता है। हालांकि, अदालत का मानना रहा है कि भ्रष्टाचार,देशविरोधी गतिविधियों तथा आतंकवादी संगठनों को मदद पहुंचाने वालों के खिलाफकार्रवाई अतार्किक नहीं है। सवाल इस बात को लेकर भी उठते रहे हैं जितने आरोप पत्र ईडी द्वारा दायर किए जाते हैं, उसकी तुलना में दोषसिद्धि की संख्या में बेहद ज्यादा अंतर क्यों है। जो इस बात की ओर इशारा करता है कि मामले दुराग्रह से प्रेरित होते हैं। अदालत भी मानती है कि ठोस प्रमाण के बिना किसी के खिलाफकार्रवाई नहीं होनी चाहिए। लेकिन एक हालिया मामले में प्रवर्तन निदेशालय की कारगुजारियों पर कोर्ट ने उसे कड़ी फटकार लगाते हुए सीमाएं लांघकर संघीय ढांचे के अतिक्रमण करने की बात कही है। कोर्ट ने यह टिप्पणी तमिलनाडु में शराब की दुकानों के लाइसेंस देने में बरती गई कथित धांधली में राज्य विपणन निगम के विरुद्ध धनशोधन मामले में ईडी की जांच पर की है। दरअसल, निगम द्वारा शीर्ष अदालत में मामला ले जाए जाने पर सुप्रीम कोर्ट ने न केवल जांच रोकी बल्कि ईडी की कारगुजारियों पर सख्त टिप्पणियां भी की हैं। निस्संदेह, ईडी को इस सुप्रीम नसीहत पर गंभीरता से विचार करना चाहिए। कोर्ट को यहां तक कहना पड़ा कि प्रवर्तन निदेशालय संघीय अवधारणा का उल्लंघन कर रहा है। उल्लेखनीय है कि पीएमएलए की धाराओं के दुरुपयोग को लेकर शीर्ष अदालत पहले भी ईडी के खिलाफसख्त टिप्पणी कर चुकी है। निस्संदेह, अदालत की इस सख्त टिप्पणी से उन तमाम विपक्षी दलों को संबल मिलेगा जो आए दिन ईडी व अन्य जांच एजेंसियों का सत्तापक्ष द्वारा दुरुपयोग करने का आरोप लगाते थे। वहीं दूसरी ओर तमिलनाडु राज्य विपणन निगम की दलील थी कि जिन शराब की दुकानों के लाइसेंस देने में अनियमितताओं के मामले में ईडी ने हस्तक्षेप किया है, उसमें वर्ष 2014 से कार्रवाई की जा रही है। साथ ही इस मामले में चालीस से अधिक प्राथमिकी दर्ज की जा चुकी हैं। वहीं निगम कई मामलों में शिकायतकर्ता है।

ऐसे में इस मामले में ईडी के कूदने पर सवाल उठे हैं। यही वजह है कि कोर्ट ने ईडी की इस जांच पर रोक लगा दी है। उल्लेखनीय है कि तमिलनाडु सरकार भी ईडी की कार्रवाई को सवैधानिक अधिकारों व संघीय ढांचे का उल्लंघन बताती रही है। विश्वास किया जाना चाहिए कि कोर्ट की सख्त टिप्पणी के बाद ईडी केंद्र की इच्छाओं के अनुरूप आंख बंद कर कार्रवाई करने की बजाय अपनी कार्यशैली में अपेक्षित परिवर्तन करेगी।

राष्ट्र की बात आती है तब दल नहीं योग्यता प्रमुख

डॉ. घनश्याम बादल

परमाणु बम की धमकी एवं गीदड़ भभकी देने वाले पाकिस्तान की हालत चार दिन की जंग के बाद ही खस्ता हो गई और जब भारत ने उसके तेरह में से ग्यारह एयरबेस क्षतिग्रस्त कर दिए और कम से कम छह पूरी तरह तबाह कर दिए व उसकी मिसाइलें एवं लड़ाकू विमान मार गिराए तथा ब्रह्मोस का प्रयोग करते हुए (यदि मीडिया की रिपोर्ट को सच मानें तो) उसे परमाणु बम के उपयोग करने की संभावना से भी वंचित कर दिया तब आनन फानन में अमेरिका के राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप ने ट्वीट करके दुनिया को इस संघर्ष विराम या सीजफायर की जानकारी दी तो एक तरह से दक्षिण एशिया एवं दुनिया ने राहत की सांस ली। वहीं यदि ट्रंप के वक्तव्य को मानें तो लाखों लोग मरने से बचे। लेकिन यहीं से देश में राजनीतिक उठापटक शुरू हो गई। विपक्ष ने मुखर होकर पूछा कि ऐसे क्या कारण थे जिनकी वजह से अचानक ही संघर्ष विराम की घोषणा करनी पड़ी और विभिन्न कोणों से सरकार पर जब हमले हुए तो प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने 12 मई को देश को संबोधित करते हुए स्पष्ट किया कि ऑपरेशन सिंदूर समाप्त नहीं हुआ है। अभी तो उसे केवल स्थगित किया गया है। उन्होंने कड़े शब्दों में पाकिस्तान एवं आतंकवादियों सहित दूसरे देशों को भी चेतावनी दे दी कि भारत के आंतरिक मामलों में किसी प्रकार का हस्तक्षेप सहन नहीं किया जाएगा तथा आतंक की किसी भी घटना को %एक्ट ऑफ वॉर' समझा जाएगा जिसका मुंहतोड़ जवाब दिया जाएगा। भले ही सरकार एवं विभिन्न रक्षा विशेषज्ञों की दृष्टि में भारत का पलड़ा इस संघर्ष में भारी रहा तथा पाकिस्तान को बड़ा नुकसान उठाना पड़ा लेकिन दुनिया में अपना पक्ष रखना भी बहुत जरूरी था। इसलिए भारत सरकार ने सात सर्वदलीय प्रतिनिधिमंडलों का गठन किया जिनका नेतृत्व जाने-माने नेताओं को सौंपा गया। 59 सदस्यों वाले इन साथ प्रतिनिधिमंडलों में लगभग सभी प्रमुख दलों के सदस्यों को शामिल किया गया लेकिन विवाद तब उठ खड़ा हुआ जब कांग्रेस ने अपनी ही पार्टी के नेता शशि थरूर को अमेरिका जाने वाले प्रतिनिधिमंडल का नेता चुने जाने के बावजूद इस पर आपत्ति दर्ज कराई। कांग्रेस के नेता जयराम रमेश ने प्रेस कॉन्फ्रेंस करके बताया कि जिन चार नेताओं के नाम कांग्रेस ने दिए थे उनमें से केवल आनंद शर्मा को ही प्रतिनिधिमंडल में शामिल किया गया है, और सरकार में अपनी मर्जी से ही शशि थरूर एवं सलमान खुर्शीद जैसे नेताओं को कांग्रेस का प्रतिनिधि बना कर भेजने का निर्णय लिया जो उसके लिए आपत्तिजनक है। एक तरह से देखें तो कांग्रेस का पक्ष अनुचित नहीं है क्योंकि हर दल को अपने उपयुक्त नेता को ऐसे प्रतिनिधिमंडलों में शामिल कराने का अधिकार है, लेकिन सरकार का कहना है कि उसने ऐसी कोई सूची मांगी ही नहीं थी तथा राष्ट्रहित को सर्वोपरि रखते हुए जिन नेताओं को उसने योग्य पाया उनका चयन इन प्रतिनिधिमंडलों में किया गया है। इस दृष्टि से

सरकार का पक्ष भी सही है क्योंकि जब राष्ट्र की बात आती है तब दल नहीं योग्यता प्रमुख हो जाती है। इसका उदाहरण स्वयं कांग्रेस की नरसिंह राव के नेतृत्व वाली सरकार ने उस समय दिया था जब 1994 में संयुक्त राष्ट्र में भारत का पक्ष रखने के लिए उसने अटल बिहारी वाजपेई के नेतृत्व में प्रतिनिधिमंडल भेजा था तो कह सकते हैं कि ऐसी परंपरा की शुरु आत स्वयं कांग्रेस ने की थी। वैसे ऐसा भी नहीं है कि पहली बार किसी सरकार ने सर्वदलीय प्रतिनिधिमंडल विदेश में भेजे हैं। इससे पूर्व भी ऐसे प्रतिनिधिमंडल भेजे जाते रहे हैं। 2008, 1971 एवं 1965 में भी सर्वदलीय संसदीय प्रतिनिधिमंडलों को भेजा गया था। जिस तरह भारत के सभी राजनीतिक दलों ने एकजुट होकर पाकिस्तान की तरफ से खड़े किए गए संकट में साथ दिया वह प्रशंसनीय कदम था लेकिन संघर्ष विराम के बाद से ही जिस तरह की राजनीति की जा रही है, उससे इस बात का भी अंदेशा है कि सेना द्वारा लगभग जीती गई जंग की महत्ता को राजनीतिक प्रतिद्वंद्विता कहीं महत्त्वहीन न कर दे। इसलिए सभी राजनीतिक दलों, चाहे सत्ता पक्ष के हों या विपक्ष के हों, को ध्यान देना होगा कि ऐसा परिदृश्य न प्रस्तुत करें कि दुनिया भर में भारत की जगहंसाई हो। खैर, एक बार फिर से लौट कर चिंतन करते हैं कि इन प्रतिनिधिमंडलों के गठन का लक्ष्य क्या है तथा ये भारत के किस-किस पक्ष को दुनिया के सामने रखेंगे और पाकिस्तान के किन षड्यंत्रों एवं आतंकवादी मानसिकता को बेनकाब करेंगे। भारत सरकार के एजेंडे के अनुसार ये प्रतिनिधिमंडल विभिन्न देशों में जाकर उन परिस्थितियों के बारे में अवगत कराएंगे जिनके चलते भारत को पलट कर वार करना पड़ा तथा किस तरह पाकिस्तान अपने पाले हुए आतंकवादियों के माध्यम से भारत को निरंतर संकट में डालता रहा है। उनका एक बिंदु यह भी होगा कि यदि पाकिस्तान को अंतरराष्ट्रीय मुद्रा कोष या अन्य देशों द्वारा अनावश्यक रूप से आर्थिक सहायता दी जाती है, तो यह देश इसका इस्तेमाल सभी शतरे एवं नियमों को अनदेखा करके हथियार खरीदने एवं आतंकवादियों को शह देने के लिए करेगा। बेशक, विपक्ष का काम है सरकार की कमियों को उजागर करना पर सबसे मुख्य बात है कि क्षणिक आवेश या निहित स्वार्थ के चलते भारत के हितों की अनदेखी न होने पाए।

गंगा किनारे कटान रोकने की तैयारी

उन्नाव में जियो ट्यूब तकनीक से बन रहा मजबूत बांध, 7 ट्यूब लगाए

उन्नाव में गंगा नदी के किनारे स्थित शुक्लागंज के रविदास नगर और आसपास के क्षेत्रों में कटान की समस्या से निपटने के लिए सिंचाई विभाग ने कार्य शुरू कर दिया है। बरसात से पहले मर्जिनल बांध का निर्माण तेजी से किया जा रहा है। सिंचाई विभाग ने आधुनिक जियो ट्यूब तकनीक का उपयोग करते हुए अब तक सात ट्यूब स्थापित किए हैं। आठवें ट्यूब की स्थापना का काम चल रहा है। किनारों पर जियो बैग भी बिछाए जा रहे हैं। ये बैग जलस्तर बढ़ने पर कटान को रोकने में मदद करेंगे। प्रत्येक साल बरसात के मौसम में गंगा का जलस्तर बढ़ने से शुक्लागंज के रविदास नगर, संग्राम खेड़ा, गंगाघाट और रामनगर में कटान की समस्या उत्पन्न होती है। इससे हजारों लोगों की जान-माल को खतरा होता है। पिछले कुछ वर्षों में कटान के कारण कई घर और जमीनें नदी में समा गई हैं।अवर अभियंता के अनुसार, जियो बैग पानी के तेज बहाव में मिट्टी को कटने से बचाते हैं और तटबंध को मजबूत बनाते हैं। यह

तकनीक पानी की दिशा को नियंत्रित करने में भी सहायक है। जियो ट्यूब तकनीक में रेत और सीमेंट से भरे बड़े ट्यूब विशेष तरीके से किनारों पर लगाए जाते हैं। ये ट्यूब पानी का तेज दबाव सहन कर सकते हैं। विभाग का कहना है कि बरसात से पहले यह कार्य पूरा कर लिया जाएगा।स्थानीय निवासियों ने निर्माण कार्य की प्रगति पर संतोष जताया है। रविदास नगर के निवासी रामशंकर का कहना है कि हर साल लोग डर के साए में जीते हैं, लेकिन इस बार लग रहा है कि प्रशासन और विभाग इस समस्या को गंभीरता से ले रहे हैं। उन्होंने उम्मीद जताई कि काम की गुणवत्ता से कोई समझौता न हो और समय पर इसे पूरा किया जाए।सिंचाई विभाग के अधिशासी अभियंता ने बताया कि मौसम को ध्यान में रखते हुए बांध निर्माण कार्य को दो सप्ताह में पूरा करने का लक्ष्य रखा गया है। अधिकारी नियमित निरीक्षण कर रहे हैं और काम की गति बनाए रखने के निर्देश दिए गए हैं। विभाग का प्रयास है कि इस बार बाढ़ से पहले सारी तैयारियां पूरी कर ली जाएं और लोगों को सुरक्षित वातावरण उपलब्ध कराया जा सके।

उन्नाव में पुलिस का मानवीय चेहरा : हादसे में बच्ची की मौत, कोतवाली प्रभारी ने दी मदद, भाई-बहन की पढ़ाई का जिम्मा भी लिया

उन्नाव । उन्नाव के सफीपुर कोतवाली क्षेत्र में पुलिस ने मानवीय पहल की है। कोतवाली प्रभारी एस.एन. त्रिपाठी ने सड़क दुर्घटना में जान गंवाने वाली 6 वर्षीय बच्ची के परिवार को आर्थिक सहायता दी है। नैनीखेड़ा निवासी संजय राजपूत की बेटी अंशिका की 22 अप्रैल को पिकअप लोडर की टक्कर से मौत हो गई थी। वाहन की चपेट में आने से बच्ची की मौके पर ही मौत हो गई। कोतवाली प्रभारी ने मृतक बच्ची के भाई-बहन की पढ़ाई का जिम्मा उठाया है। उन्होंने दोनों बच्चों को स्कूल बैग, किताबें और यूनिफॉर्म दी है। साथ ही दोनों बच्चों को 10-10 हजार रुपये की सहायता भी प्रदान की है। 27 मई को थाना प्रभारी ने बच्ची के माता-पिता को थाने बुलाकर यह राशि सौंपी लोगों ने की सराहना इस मौके पर गांव के पूर्व प्रधान दिनेश सहित कई स्थानीय लोग मौजूद थे। स्थानीय नागरिकों ने कोतवाली प्रभारी की इस पहल की सराहना की है। उनका कहना है कि ऐसी संवेदनशील कार्रवाई से पुलिस के प्रति जनता का विश्वास बढ़ता है।

शादी में एक मैरेज हाल में भोजन करने गया युवक को पीटकर अधमरा करने का आरोप

आजमगढ़।अहरौला थाना क्षेत्र के एक मैरेज हाल में बीते रविवार को बारात आयी थी जहां दाऊदपुर गांव का एक युवक खाना खाने पहुंचा आरोप है कि मैरेज हाल मालिक ने युवक को जमकर पीटकर अधमरा कर दिया घायल युवक द्वारा बारातियों के गाड़ी पर ईंट फेंककर शीशा तोड़ने का आरोप है। मौके पर 112 पर सूचना दी गई आरोप है कि गुस्साए बारात के लोग युवक को गाड़ी में मारते पीटते लेआकर थाने के सामने छोड़ गये जहां से परिजन भोर में उठाकर वेहोशी की हालत में घर ले गए सोमवार की सुबह सीएचसी अहरौला में भर्ती कराया गया घायल युवक की मां शोभा पत्नी रामनारायन ने थाने में मैरेज हाल मालिक सहित दो लोगों के खिलाफ नामजद तहरीर दी है।वही प्राथमिक उपचार के बाद घायल प्रभुनाम (20)को जिला अस्पताल रेफर कर दिया गया। थानाध्यक्ष अहरौला प्रदीप कुमार ने बताया कि तहरीर मिली है जांच कि जा रही है।वही रेफर प्रभुनाथ को परिजन टैंपो से लेकर जिला अस्पताल जा रहे थे जब उनसे एम्बुलेंस सेवा के बारे पुछा गया तो परिजनों ने बताया कि 108 एम्बुलेंस सेवा के लोग रेफर बनाने वाले डाक्टर से बात करने को कह रहे थे डाक्टर ने बात नहीं कि कहा कि आप प्राईवेट वाहन से लेकर जाओ इस संबंध में जब सीएचसी अधीक्षक डॉ मोहनलाल से पुंछा गया तो उन्होंने बताया कि घायल प्रभू नाथ को पुलिस संरक्षण में एक्सरे रिपोर्ट को जिला अस्पताल रेफर किया गया था हालत गंभीर नहीं थी ऐसे में एम्बुलेंस सेवा संभव नहीं होती।

अहिल्याबाई होल्कर ने देश के लिए जो योगदान दिया है वह सदैव याद रखा जायेगा

आजमगढ़ । रानी अहिल्याबाई होलकर की जन्म त्रिशताब्दी के अवसर पर पूरे देश में जन्म उत्सव धूमधाम से मनाया जा रहा है।इसी क्रम में ठेकामा ब्लॉक सभागार में ग्राम पंचायत प्रतिनिधियों का सम्मेलन आयोजित किया गया। जिसमें मुख्य अतिथि सुनील गुप्ता क्षेत्रीय महामंत्री भाजपा गोरखपुर क्षेत्र एवं विशिष्ट अतिथि नीलम सोनकर पूर्व सांसद उपस्थित रही। संचालन आदर्श राय ने और अध्यक्षता अनिल राय ने किया।प्रतिनिधियों को संबोधित करते हुए मुख्य अतिथि सुनील गुप्ता क्षेत्रीय महामंत्री भाजपा ने कहा माता अहिल्याबाई होल्कर ने देश के लिए जो योगदान दिया है वह सदैव याद रखा जायेगा पूर्व सांसद नीलम सोनकर ने कहा माता अहिल्या बाई महिलाओं के लिए प्रेरणा स्रोत है।इस अवसर पर कार्यक्रम संयोजक आदर्श राय, चंदेश्रर राय, सिनोद मौर्य, शरद राय, उमाकांत तिवारी, संतोष चौबे, अंजना सिंह, सुनीता भारती, वीरेंद्र राय, सुनील सिंह,अभिषेक राय, अमित बिंद, रजनीकांत तिवारी, मनीष राय, रमेश सरोज, सूर्यभान राय, अरविंद राय सहित इत्यादि प्रधान एवं क्षेत्र पंचायत सदस्य उपस्थित रहे ।

चोरी के ट्रैक्टर-ट्राली और तमंचा के साथ शातिर गिरफ्तार

आजमगढ़। सिधारी थाने की पुलिस ने चोरी की घटना का किया सफल अनावरण,गिरफ्तार अभियुक्तों के कब्जे से 01 अदद स्वराज ट्रैक्टर नं0- क्क0र्ष्ठ3144 मय ट्राली, 01 अदद देशी तमंचा .315 बोर व 01 अदद जिन्दा कारतूस, 490 रूपये नगद, 02 अदद मोबाइल फोन (1. सैमसंग, 2. ढ्ढत्तह्ह) बरामद, वादी रामचन्दर यादव पुत्र लक्ष्मी यादव साकिन करनपुर थाना जहानागंज जनपद आजमगढ़ द्वारा थाना सिधारी पर आकर लिखित तहरीर दिया गया कि दिनांक 16.05.2025 की रात्रि में समय 11 बजे से 01 बजे के मध्य डेन्टल कालेज के सामने इटौरा से ट्रैक्टर वाहन संख्या क्क0र्ष्ठ3144 को किसी के द्वारा चुरा लिया गया । जिसके आधार पर थाना स्थानीय पर मु0अ0सं0- 241/2025 धारा 303(2) बी0एन0एस0 बनाम अज्ञात के विरुद्ध पंजीकृत किया गया । पूछताछ में गिरफ्तार अभियुक्त उपेन्द्र यादव पुत्र सुरेश यादव ग्राम पक्खनपुर थाना भुड़कुड़ा जनपद गाजीपुर उम्र 19 वर्ष तथा अंकित पाल पुत्र कैलाश पाल ग्राम भटारो थाना भुड़कुड़ा जनपद गाजीपुर उम्र 19 वर्ष द्वारा बताया गया कि हम लोग व हमारे साथी मिन्टू यादव पुत्र बेचन यादव निवासी शेखपुर परसपुर थाना भुड़कुड़ा जनपद गाजीपुर व शिवम पाल जो अपने नाना सुन्नर पाल निवासी भटारो जनपद गाजीपुर के यहां रहता है उसके घर के बारे में हम लोगों को नहीं मालूम है । ये ट्रैक्टर हम चारों लोग इटौरा डेण्टल कालेज के सामने से

चुराकर छतवारा, हुसैनगंज, पहलवान तिराहा, नरौली तिराहा से बैठौली होते हुए हाफिजपुर चौराहे से जीयनपुर अजमतगढ होते हुए अमिलो से घोसी से मरदह से जखनिया में शेखूपुर परसपुर गांव में साथी मिन्टू यादव के ट्यूबेल पर छुपाकर रखे थे । हम लोगों का एक संगठित गिरोह है । हम लोग गाड़ियों को चुराकर बेचकर बराबर बराबर पैसा बांटकर अपना जीवन यापन करते हैं । इसके पहले भी हम लोग छोटी मोटी चोरी किये लेकिन पकड़े नहीं गये। आज हम लोग मुख्य मार्ग से न जाकर लिंक रोड़ होते हुए करनपुर पुल से नहर पकड़कर हम लोग गांव गिरांव होते हुए अम्बेडकरनगर में जाकर ट्रैक्टर ट्राली को बेच देते जो भी पैसा मिलता उसे हम लोग बराबर बांट लेते। सोमवार को उ0नि0 धर्मेन्द्र कुमार चौकी प्रभारी इटौरा मय हमराह उ0नि0 पवन पाण्डेय, हे0कां0 धीरज यादव, हे0कां0 धर्मराज भारती, कां0 अंशुमान सिंह, व कां0 राहुल पाण्डेय के साथ देखभाल क्षेत्र व रात्रि गस्त करते हुए इटौरा तिराहे पर मौजूद थे कि सूचना मिली कि आपके क्षेत्र से रामचन्दर यादव का इटौरा से जो ट्रैक्टर चोरी हुआ था उस ट्रैक्टर को सुम्भी बाजार की तरफ से 04 व्यक्ति लेकर आ रहे हैं करनपुर पुलिया से नहर वाली रोड़ पकड़कर अम्बेडकरनगर की तरफ ले जाकर कहीं बेचने के फिराक में हैं । मुखबिर खास की सूचना पर विश्वास कर सभी पुलिस वाले करनपुर पुलिया के पहुंचकर आने वाले ट्रैक्टर का इन्तजार करने लगे कि थोड़ी देर में एक ट्रैक्टर आता हुआ दिखाई दिया ।

संक्षिप्त समाचार

जिला वृक्षारोपण समिति, पर्यावरण समिति एवं गंगा समिति की बैठक सम्पन्न

सोनभद्र। जिलाधिकारी बीएन सिंह की अध्यक्षता में सोमवार को विकास भवन सभागार में जिला वृक्षारोपण समिति, पर्यावरण समिति एवं गंगा समिति की बैठक की गयी। बैठक के दौरान जिलाधिकारी ने सम्बन्धित अधिकारियों को निर्देशित करते हुए कहा कि वृक्षारोपण हेतु जिन विभागों को जो भी लक्ष्य दिये गये हैं, वह उसके अनुरूप गड्ढा खुदाई का कार्य ससमय कर लें, हरीतिमा ऐप पर लक्ष्य के सापेक्ष शत-प्रतिशत जीओ टैगिंग कराना सुनिश्चित करें, समस्त राजकीय, निजी स्वास्थ्य केन्द्रों, अस्पतालों तथा पशु चिकित्सालयों में उत्पन्न होने वाले जैव चिकित्सा अपशिष्ट मानक के अनुसार निस्तारित किया जाये, उद्योगों द्वारा खतरनाक अपशिष्ट को नदियों व तालाबों में जाने से रोकने हेतु प्रभावी कार्यवाही की जाये, खनिज परिवहन से उत्पन्न होने वाले फ्लाईऐस के नियंत्रण हेतु प्रभावी कार्यवाही की जाये, नदियों को स्वच्छ निर्मल व अविरल रखने हेतु जागरूकता अभियान चलाया जाये, कृषि विभाग द्वारा सोन नदी के किनारे बसे गांवो में किसानो को आरगैनिंक प्राकृतिक खेती हेतु जागरूकता कार्यक्रम चलाया जाये। इस मौके पर डीएफओ राबर्ट्सगंज कुंज बिहारी वर्मा, जिला पंचायत राज अधिकारी नमिता शरण, जिला कृषि अधिकारी हरेकृष्ण मिश्र, अपर जिला सूचना अधिकारी विनय कुमार सिंह सहित सम्बन्धित अधिकारीगण उपस्थित रहे।

रोजगार मेला 28 को

सोनभद्र। जिला सेवायोजन अधिकारी ने अवगत कराया है कि जिला सेवायोजन कार्यालय द्वारा जनपद के बेरोजगार अभ्यर्थियों को रोजगार देने के लिए 28 मई,2025 को प्रात: 10.00 बजे से जिला सेवायोजन कार्यालय, खुशबू बाग नर्सरी रोड (जिला अस्पताल के सामने) लोढी, राबर्ट्सगंज के परिसर में रोजगार मेला का आयोजन किया गया है, जिसमें निजी क्षेत्र की लगभग 16 कम्पनियां प्रतिभाग करेंगी जिसमें सी0पी0पी0एल0, राबट्र्सगंज, सोनभद्र, सूद ऑटोमोबाईल्स, राबर्ट्सगंज, नवर्ण भारत प्रा0 लि0, नोएडा, वोन इण्डिया सर्विसेज प्रा0 लि0, नोएडा, क्रेडिट एक्सेस ग्रामीण लि0, राबर्ट्सगंज, डीसेट्स, फरीदाबाद, शिव शक्ति एग्रीटेक लि0 वाराणसी, एस0बी0आई0 कार्ड, वाराणसी, मीडलैण्ड माइक्रोफीन, राबर्ट्सगंज, वज्ज एल0ई0डी0 सोल्यूशन्स प्रा0लि0, राबट्र्सगंज, सोलेरा इण्डस्ट्रीज प्रा0लि0, मधुपुर, विश्वनाथ इण्टरप्राईजेज (रॉयल इनफिल्ड), राबर्ट्सगंज, नेशनल सेक्योरिटी सर्विसेज, राबर्ट्सगंज, स्वास्तिक इण्टरप्राईजेज, राबर्ट्सगंज, अर्ष इण्टरप्राईजेज, राबट्र्सगंज, एवं श्रीराम फाईनेन्स, राबर्ट्सगंज, इत्यादि कम्पनियों द्वारा विभिन्न पदों पर भर्तियां की जाएगी। समस्त इच्छुक एवं योग्य बेरोजगार अभ्यर्थियों का साक्षात्कार नियोजकों द्वारा जिला सेवायोजन कार्यालय, खुशबू बाग नर्सरी रोड (जिला अस्पताल के सामने) लोढ़ी, राबट्र्सगंज के परिसर में लिया जायेगा। यह रोजगार मेला पूर्णत: नि:शुल्क है, इस हेतु कोई यात्रा व्यय देय नहीं होगा।

छात्र-छात्राओं को समर कैम्प में दिए प्रशिक्षण

सोनभद्र। बदलते हुए परिवेश में दुषित परिवेश में शरीर को स्वस्थ रखना बहुत जरूरी हो गया है, जिसके लिए योगा अभ्यास द्वारा शरीर को स्वस्थ रखने का प्रयास। कम्पोजिट विद्यालय तकिया दरगाह, ब्लॉक करमा, जिला उ0प्र0 में सोमवार को समर कैम्प का प्रशिक्षण देते हुए,रवीन्द्र बहादुर सिंह अनुदेशक, बृजेश चंद्र मिश्रा अनुदेशक बेहतर कार्य से जागरूक किये। समर कैम्प में ग्राम सभा तकिया बीडीसी रेनू मौर्या व कोशिश आर्ट वेलफेयर सोसायटी उ0प्र0 टीम का भी भरपूर सहयोग प्राप्त हुआ समर कैम्प मे। अभिभावक ऐसी पहल से अत्यधिक प्रभावित है, और भरपूर सहयोग कर रहे है समर कैम्प में। वही बृजेश चंद्र मिश्रा अनुदेशक ने बताया कि सर्वांगीण विकास के लिए योग भी मनुष्य के जीवन के लिए अनिवार्य भाग है जिसको लेकर शिविर के माध्यम से छात्राओं को प्रेरित व प्रशिक्षण के माध्यम से सिखाया पढ़ाया जा रहा है और प्रेरित करते हुए उनको जागरूक भी किया जा रहा है कि वह प्रतिदिन योगाभ्यास करें जिससे भविष्य में किसी प्रकार से बीमारी से ग्रसित ना हो पाए और उत्तेजित ऊर्जा के साथ शिक्षा क्षेत्र में आगे बढ़ते रहे जिसमें अभिभावकों का भी काफी भूमिका सहयोग साथ छात्रों के प्रति देखने को मिल रहा है।

मां-बाप के साथ ससुराल में पहुंची दुल्हन की पिटाई

आजमगढ़। जानकारी के अनुसार आजमगढ़ जिला के नगर पालिका परिषद बिलरियागंज के भागलपुर वार्ड में गाजी मियां के मेला के स्थान रौजा पर रविवार की शाम किसी बात को लेकर महिलाओं के बीच जमकर मारपीट हुई इसमें एक पक्ष से तहरीम बानो पत्नी रिजवान अहमद भगतपुर और तलीमुल निशा पत्नी सोहराब अहमद तथा सोहराब अहमद पुत्र अली अहमद मस्जिदिया थाना निजामाबाद बुरी तरह से घायल हो गए। इस संबंध में घायल तहरीम बानो ने अपने पटीदार शाहनवाज पुत्र इमरान व इमरान पुत्र स्वर्गीय नेयाज तथा शारिक पुत्र इमरान व हया पुत्री इमरान को नाम जद किया है। तहरीम बानो ने बताया कि उसका पति इस समय बाहर रहता है रविवार को वह अपने माता-पिता के साथ अपने ससुराल बिलरियागंज थाना क्षेत्र में अपना बंद मकान देखने आई थी। जब खिड़कियों का सीसा वगैरा टूटा देखा तो पड़ोसियों से पूछना चालू किया इस बात को लेकर पड़ोस की महिला भड़क गई और आपस में जमकर विवाद की । विवाद मारपीट में बदल गया जिसमें तहरीम बनो और उसके पिता सोहराब का सर फट गया और श्रीर मे काफी चोटें आई तथा उसकी माता तालीमून निशा को भी काफी चोट आई इस संबंध में तहरीम बानो ने बिलरियागंज थाने में रौजा भगतपुर निवासी शाहनवाज इमरान शरीक और हया के नाम नामजद प्रार्थना पत्र देकर न्याय की गुहार लगाइ है।

शिक्षकों का यह दायित्व है कि वह बच्चों को गुणवत्तायुक्त शिक्षा प्रदान करें- जिलाधिकारी

आजमगढ़। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ द्वारा आज लोक भवन लखनऊ से प्रदेश में 39 उच्चीकृत कस्तूरबा गांधी बालिका विद्यालयों के नवनिर्मित भवनों/अतिरिक्त डॉरमेट्री का लोकार्पण एवं 43 मुख्यमंत्री मॉडल कम्पोजिट विद्यालयों एवं 66 मुख्यमंत्री अभ्युदय कम्पोजिट विद्यालयों का वर्चुअल माध्यम से शिलान्यास किया, इसके साथ ही मा0 मुख्यमंत्री जी ने ड्रेस, स्वेटर, स्कूल बैग, जूता-मोजा एवं स्टेशनरी क्रय हेतु प्रति छात्र-छात्रा रू0 1200 की धनराशि उनके माता-पिता/अभिभावक के बैंक खाते में डीबीटी के माध्यम से हस्तांतरित किया। उक्त कार्यक्रम का सजीव प्रसारण जिलाधिकारी श्री रविन्द्र कुमार-।।, मुख्य विकास अधिकारी परीक्षित खटाना एवं जिलाध्यक्ष लालगंज श्री अरविन्द राजभर जी की उपस्थिति में किया गया।जिलाधिकारी ने कहा कि जनपद आजमगढ़ में बेसिक शिक्षा के लगभग 2700 विद्यालय हैं। उन्होने कहा कि निरीक्षण में पाया गया है कि विद्यालयों में पंजीकृत छात्र/छात्राओं के सापेक्ष 70 प्रतिशत बच्चे ही स्कूल आते हैं, सरकार द्वारा बेसिक शिक्षा के विद्यालयों में ड्रेस, स्वेटर, स्कूल बैग, जूता-मोजा एवं स्टेशनरी, मिड-डे-मिल आदि मुफ्त दिये जाने के बाद भी विद्यालयों में कम उपस्थिति संतोषजनक नही है। उन्होने कहा कि राष्ट्रीय बाल स्वास्थ्य कार्यक्रम (आरबीएसके) के अन्तर्गत विद्यालयों में फ्री में हेल्थ चेकअप भी किया जाता है, विद्यालयों मे आरबीएसके की टीम जाकर बच्चों के स्वास्थ्य की जांच करती है। इसके साथ ही गम्भीर बिमारी मिलने पर सेकेण्डरी ईलाज, जिसमें टीम द्वारा अच्छे अस्पतालों में बच्चों का ईलाज एवं सर्जरी करायी जाती है। जिलाधिकारी ने कहा कि बेसिक शिक्षा के 2700 स्कूलों में लगभग 3 लाख छात्र-छात्राएं पंजीकृत हैं। उन्होने कहा कि समीक्षा में पाया गया है कि लगभग 30 हजार बच्चों का आधार सत्यापन नही हो पाया है, इसके लिए जिन बच्चों का आधार नही बना है, उन सबका जल्द से जल्द आधार बनवायें। उन्होने कहा कि जो बच्चे यहां नही रहते हैं, उनका नाम हटा दें, जिससे हमारे उपस्थिति का प्रतिशत बढ़ेगा। जिलाधिकारी ने अध्यापकों से कहा कि ग्रामों में जाकर अभिभावकों से मिलें और उनके बच्चे के लिए सरकार द्वारा विद्यालयों में दी जाने वाली सुविधाओं के विषय में जागरूक करते हुए बच्चों का अधिक से अधिक नामांकन विद्यालयों में करायें एवं शिक्षक का यह दायित्व है कि वह बच्चों को गुणवत्तायुक्त शिक्षा प्रदान करें। इसके लिए शिक्षकों को मोटिवेट होने की जरूरत है। उन्होने कहा कि खण्ड शिक्षा अधिकारी ब्लाक स्तर पर पाजीटिव सुपरवाइजरी रोल को बेहतर करें, जिससे शिक्षक भी पढ़ाने हेतु एक्टिवेट हों, और बच्चों को अच्छी शिक्षा मिले एवं बच्चों की

उपस्थिति बढ़े, तब जाकर सरकार की मंशा पूरी तरीके से फलीभूत होगी। उन्होने कहा कि विद्यालयों का बेसिक इन्फ्रास्ट्रक्चर आपरेशन कायाकल्प के अन्तर्गत अच्छी हो गयी है, शिक्षक लगभग हर जगह हैं। जिलाधिकारी ने कहा कि जनपद के 2700 स्कूलों में से लगभग 980 स्कूलों में समर कैम्प का आयोजन किया जा रहा है। जिसके अन्तर्गत कई तरीके के एक्टिविटी चल रही है। उन्होने कहा कि समर कैम्प बच्चों के अन्दर की प्रतिभा को एक मंच प्रदान करता है। उन्होने कहा कि 793 विद्यालय निपुण घोषित हैं, 404 विद्यालयों में स्मार्ट क्लास चल रहे हैं, 168 विद्यालय आईसीटी लैब से आच्छादित हैं तथा 17 विद्यालय पीएम श्री के अन्तर्गत हैं, जिसमें स्मार्ट क्लास, लाइब्रेरी, खेल का मैदान आदि सुविधायें दी जा रही हैं। उन्होने कहा कि 793 निपुण विद्यालयों में से 110 निपुण विद्यालयों, 66 आईसीटी लैब से आच्छादित विद्यालयों, 66 समर कैम्प आयोजित करने वाले विद्यालयों को सम्मानित किया जायेगा। उन्होने कहा कि सम्मान देना एक मोटिवेशन है, आज जिन लोगों ने अच्छा किया है, उनको सम्मानित किया जा रहा है एवं जो लोग अच्छा नही कर रहे हैं, वे और अच्छा करें, ताकि आगे उनको भी सम्मानित किया जाए। उन्होने कहा कि आगामी 15 अगस्त को भी जिला प्रशासन द्वारा अच्छे अध्यापकों/प्रधानाध्यापकों को सम्मानित किया जायेगा। जिलाधिकारी ने कहा कि हमारा प्रयास रहेगा कि जनपद में विद्यालयों के अन्दर छात्रों का नामांकन बढ़े और निपुण भारत मिशन के अन्तर्गत हमारा जनपद ग्रेड ए में आये। यह तभी सम्भव है जब हम अभिभावकों को योजनाओं की जानकारी देंगे, शिक्षकों को मोटिवेट रखेंगे एवं बच्चों को अच्छी शिक्षा देंगे। उन्होने कहा कि मुख्यमंत्री कम्पोजिट मॉडल स्कूल जिसमें कक्षा 01 से लेकर 12 तक की शिक्षा दी जायेगी, जिसके लिए ऐसे 04 स्कूल का प्रस्ताव राज्य सरकार को भेजा गया है और हमें आशा है कि जल्दी ही स्वीकृत होकर आ जायेगी, तो इस जनपद को भी अटल आवासीय विद्यालय की तर्ज पर मुख्यमंत्री मॉडल कम्पोजिट विद्यालय मिलेगा, जिससे बच्चों को और बेहतर शिक्षा मिलेगी।इसके साथ ही जिलाधिकारी द्वारा स्मार्ट क्लास में अच्छा प्रदर्शन करने वाले विद्यालयों में कम्पोजिट विद्यालय सराय मोहन, कम्पोजिट विद्यालय फूलपुर, प्रा0वि0 महुआर, तहबरपुर, कम्पोजिट विद्यालय मल्लूपुर बिलरियागंज, उ0प्रा0वि0 बाजार गोसाईं, कम्पोजिट विद्यालय जमुआरी हरैया, उ0प्रा0वि0 सुराही बुजुर्ग मिर्जापुर, उ0प्रा0वि0 बिंदवल बिलरियागंज, कम्पोजिट विद्यालय खुरासो अहिरौला, उ0प्रा0वि0 बभनौली माफी पल्हनी, निपुण विद्यालयों में कम्पोजिट विद्यालय जहनियापुर मुहम्मदपुर, कम्पोजिट विद्यालय जाफरपुर, कम्पोजिट विद्यालय जोकहरा हरैया, कम्पोजिट विद्यालय सरायमीर मिर्जापुर, प्रा0वि0 एकरामपुर पल्हनी, प्रा0वि0 गहुनी मेंहनगर, प्रा0वि0 गयासपुर पल्हनी, समर कैम्प के आयोजन में अच्छा प्रदर्शन करने वाले विद्यालयों में कम्पोजिट विद्यालय लूसा मुबारकपुर मुहम्मदपुर के शिक्षक मुदिता व राजेश्वर, कम्पोजिट विद्यालय खराटी मुहम्मदपुर के शिक्षक सुनीता चौहान, कम्पोजिट विद्यालय ठेकमा के शिक्षक राज बहादुर सिंह, कम्पोजिट विद्यालय रोवा मुहम्मदपुर के शिक्षिका नीतू बरनवाल, कम्पोजिट विद्यालय धरवारा जहानागंज की शिक्षिका किरन यादव, उ0प्रा0वि0 जहानागंज की शिक्षिका माधुरी सिंह, उ0प्रा0वि0 करनपुर के शिक्षक रूपम, उ0प्रा0वि0 लेडूपार के शिक्षक दीपक सिंह, प्रा0वि0 अरांव गुलजार कोयलसा के शिक्षक शैलेश सिंह एवं प्रा0वि0 लारपुर तहबरपुर के शिक्षक लल्लन यादव को प्रतिकात्मक रूप से प्रशस्ति पत्र देकर सम्मानित किया गया। इस अवसर पर मुख्य विकास अधिकारी परीक्षित खटाना, जिलाध्यक्ष लालगंज अरविन्द राजभर, जिला विकास अधिकारी संजय कुमार सिंह, बीएसए राजीव पाठक, डायट प्राचार्य सहित संबंधित अधिकारी एवं शिक्षक/शिक्षिकाएं उपस्थित रहे।

अहिल्याबाई ने अपना जीवन भगवान शिव को किया था समर्पित-प्रभारी मंत्री

सोनभद्र। पुण्यश्लोक लोकमाता महारानी अहिल्याबाई होल्कर के 300 वीं जयन्ती स्मृति अभियान के अंतर्गत उनके द्वारा किये गये प्रेरणादायी कार्यो के जीवन दर्शन पर पंचायत प्रतिनिधि सम्मेलन का आयोजन डी आर ड्रीम्स हॉल राबट्र्सगंज में सम्पन्न हुआ। कार्यक्रम मे बतौर मुख्यअतिथि राज्यमंत्री उ0प्र0 सरकार व प्रभारी मंत्री रवीन्द्र जायसवाल मौजूद रहे। सम्मेलन का शुभारंम्भ पं0 दीनदयाल उपाध्याय व डॉ0 श्यामा प्रसाद मुखर्जी व लोकमाता अहिल्याबाई होल्कर के चित्र पर माल्यार्पण व दीप प्रज्जवलन कर किया। सम्मेलन की अध्यक्षता भाजपा जिलाध्यक्ष नन्दलाल संचालन जिला महामंत्री/कार्यक्रम संयोजक रामसुन्दर निषाद ने किया। इस अवसर पर मुख्यअतिथि जिला प्रभारी मंत्री रवीन्द्र जायसवाल ने कहा कि न्यायप्रिय प्रशासक, सामाजिक कुरीतियों से जीवन पर्यंत लड़ने वाली नारी सम्मान एवं प्रतिष्ठा की प्रतिक महारानी अहिल्याबाई होलकर की 300 वीं जयंती के अवसर पर उनके जीवन पर्यंत कार्यों को से अवगत होने का अवसर प्राप्त हुआ है। उनके द्वारा समाज कल्याण के लिए किए गए अनेक अनेक कार्यों को छिपाने का प्रयास पूर्ववर्ती सरकारों ने किया किंतु भारतीय जनता पार्टी की सरकार देश के समस्त महान विभूतियां के कार्यों को नमन करती है व आम जनमानस तक उनके किए कार्यों जीवन वृतांत को बताती है। उनके जीवन का कण कण पल पल मानव कल्याण के लिए लगा 300 वर्ष पूर्व उन्होंने कुआ, तालाब, बावड़ी बनवाई नारी सम्मान के लिए अनेक कुरीतियों के खिलाफ संघर्ष किया न्याय प्रियता की प्रतीक बनी अपने जीवन में 26 वर्षो तक का सुशासन का आदर्श प्रस्तुत किया न्याय के लिए अपने पुत्र को भी मृत्यु दंड दिया देशभर में मंदिरों शिवालियों का निर्माण एवं जीणोद्धार कराया नारी शिक्षा को बढ़ावा दिया बाल विवाह, विधवा विवाह, सती प्रथा जैसी अनेक कुरूतियो के लिए संघर्ष किया महिला पुरुषार्थ के लिए अपनी सेना में महिलाओं की भर्ती कर राष्ट्र की रक्षा में महिलाओं की भागीदारी सुनिश्चित किया वास्तव में अहिल्याबाई होल्कर दूरदर्शी महिला थी जिनसे हमें प्रेरणा लेनी चाहिए। सम्मेलन को संबोधित करते हुए एमएलसी विनीत सिंह ने कहा कि सनातन समाज के साथ साथ देशहित के लिए अहिल्याबाई होल्कर ने जो कार्य किया है, उसे लंबे समय तक याद किया जायेगा आज की महिलाओं को अहिल्याबाई होल्कर के जीवन चरित्र से प्रेरणा लेनी चाहिए। देश समाज महिला शोषित वंचित व सनातन धर्म के विकास पर उनका विशेष ध्यान रहा है। सम्मेलन को संबोधित करते हुए जिला प्रभारी अनिल सिंह ने कहा कि अहिल्याबाई होल्कर एक कुशल प्रशासिका और न्यायप्रिय शासक रही अहिल्याबाई ने अपना जीवन भगवान शिव को समर्पित कर दिया था वे शासकिय कार्यो मे अपने हस्ताक्षर की जगह भगवान शिव का नाम लिखती थी।

आर्य समाज स्कूल समबूला के साथ पूरे फिजी मे हर्षोउल्लास के साथ मनाया गया 146वा गिर्मिटिया दिवस

आजमगढ़। भारत देश की गौरव गाथा और गौरवशाली पूर्वांचल की संस्कृति और महिमा के लिए गिरमिटिया मजदूर के रूप में 146 साल पहले फीजी और अन्य देशों में गए भारत के पूर्वजों के सम्मान में फीजी देशवासियों ने अलग-अलग स्थानों पर अपने पूर्वजों के याद में गिरमिटिया यादगार दिवस को विभिन्न झांकियों के माध्यम से अंतरराष्ट्रीय सांस्कृतिक कार्यक्रम किया। जिसका संपूर्ण संचालन और आयोजन कोऑर्डिनेटर श्री राज बिंद्रा सिंह और हेडमास्टर श्री प्रवीण कपूर के नेतृत्व में स्कूल के बच्चों द्वारा नाटक,गीत,संगीत और झांकियों से गिरमिटिया वंशजों को नमन किया गया। जिसके मुख्यअतिथि फिजी देश की केंद्रीय हिंदी टीचर्स एसोसिएशन की अध्यक्षा, यूनिवर्सिटी ऑफ़ फीजी की छात्रा रही,फीजी डी.ए.वी. गर्ल्स कॉलेज की अंग्रेजी और

हिंदी की शिक्षिका सुश्री सुऐता दत्त चौधरी जो भारत के अंतरराष्ट्रीय संयोजक अरविंद श्रीवास्तव चित्रांश के अंतरराष्ट्रीय सम्मेलनों के विशेष सहयोगी भी है।गौरवशाली पूर्वांचल के प्रधान संपादक एवं प्रभारी,अंतरराष्ट्रीय संयोजक अरविंद चित्रांश ने कहा कि हमारे ही पूर्वज विदेशों में जाकर अपनी प्रतिभा,संस्कृति की गौरव गाथा और संघर्षो को भूले नहीं हैं।अपने गिरमिटिया पूर्वजों की याद में आज भी वह भारत को बड़े ही सम्मान के दृष्टि से देखते हैं। फीजी गिरमिटिया यादगार दिवस के मुख्य अतिथि सुश्री सुऐता दत्त चौधरी ने कहा की हमें कभी नहीं भूलना चाहिए कि हम अपने पूर्वजों के जीते-जागते सपने हैं। हम पर यह जिम्मेदारी है कि हम उनकी विरासत को एकता,शिक्षा, सम्मान और सांस्कृतिक गौरव के माध्यम से आगे बढ़ते रहें। हम उन्हें सिर्फ शब्दों से नहीं, बल्कि अपने कर्मों से सम्मान दें। दयालु, परिश्रमी और सम्मानजनक नागरिक बनकर। यहाँ उपस्थिति सभी विद्यार्थियों तुम ही कल की आशा हो। अपने इतिहास को जानो,अपनी जड़ों का सम्मान करो और हमेशा सिर ऊँचा रखकर चलो, क्योंकि तुम्हारे पूर्वज धैर्य और शक्ति के सच्चे योद्धा थे।जिसे हम नमन करते हैं। और अंत में? मैं अपने हृदय की गहराइयों से भारत से आए सभी गिरमिटिया पूर्वजों को नमन करती हूँ।उनका साहस हमें हमेशा प्रेरणा देता रहे और उनके बलिदान कभी भूले ना जाएँ।

एनटीपीसी विंध्याचल में झलकी कला, संवेदना और सामाजिक संदेश की त्रिवेणी

सोनभद्र। एनटीपीसी विंध्याचल विंध्य क्लब द्वारा भोपाल के सुप्रसिद्ध शैडो ग्रुप के सहयोग से 11 से 25 मई,2025 तक आयोजित 15 दिवसीय थिएटर वर्कशॉप का सफल समापन परियोजना के उमंग भवन सभागार मे हुआ। इस अनोखे आयोजन का मुख्य आकर्षण रहा नाट्य प्रस्तुति 'रंगायन' द मेलोडी ऑफ आर्ट', जिसने दर्शकों को भाव विभोर कर दिया। इस वर्कशॉप में विंध्याचल परियोजना के कर्मचारियों और उनके परिवारजनों ने उत्साहपूर्वक भाग लिया। प्रतिभागियों ने मंच के माध्यम से कई महत्वपूर्ण सामाजिक मुद्दों को उजागर कियाकृजैसे बच्चों में मोबाइल के अत्यधिक उपयोग को नियंत्रित करना, पारंपरिक खेलों को पुनर्जीवित करना, और महिलाओं की भूमिका व उनके त्याग को पहचानना। यह कार्यशाला केवल अभिनय सीखने का माध्यम नहीं रही, बल्कि प्रतिभागियों के भीतर संवेदनशीलता, आत्मअनुशासन और सामाजिक चेतना को भी जागृत करने वाली साबित हुई। कार्यक्रम के समापन समारोह में ई.सत्य फणि कुमार, कार्यकारी निदेशक (विंध्याचल) मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित रहे। साथ ही कई अन्य वरिष्ठ अधिकारी भी उपस्थित थे, जिनमें डॉ. बी.सी. चतुर्वेदी, संजीब कुमार साहा, ए.जे. राजकुमार, राजशेखर पाला, अतिन कुंडू और राकेश अरोड़ा, मानव संसाधन प्रमुख शामिल रहे। इसके अतिरिक्त सारिका चतुर्वेदी, उपाध्यक्ष और शिल्पा कोहली, महासचिव की उपस्थिति ने कार्यक्रम की गरिमा को और बढ़ाया। गणमान्य अतिथियों ने प्रतिभागियों की कड़ी मेहनत, समर्पण और सामाजिक जागरूकता की प्रशंसा करते हुए थिएटर को एक सशक्त संवाद माध्यम बताया, जो न केवल मनोरंजन करता है बल्कि समाज को दिशा भी देता है। यह कार्यक्रम विंध्य क्लब की रचनात्मक सोच और आयोजन क्षमता का प्रत्यक्ष प्रमाण बना, जो आगे भी ऐसे प्रयासों से समाज में सकारात्मक परिवर्तन लाने के लिए प्रेरणा देता रहेगा।

प्राण निछावर करने वाले व्यापारियों को दी गई श्रद्धांजलि

सोनभद्र। उत्तर प्रदेश उद्योग व्यापार मण्डल ने व्यापारी हीतों की रक्षा के लिए अपने प्राण निछावर करने वाले अपने बहादुर साथियों की याद में मृतक हुये हर वर्ष 26 मई को श्रद्धांजलि कार्यक्रम पूरे प्रदेश में आयोजित होता किया जाता है। इसी याद में उत्तर प्रदेश उद्योग व्यापार मण्डल के सभी नगरों में श्रद्धांजलि सभा आयोजित किया गया। जनपद मुख्यालय पर इन्डीयन ट्रेनिंग सेंटर मेन चौक पर श्रद्धांजलि सभा हुई जिसमे व्यापार मण्डल के पदाधिकारीयो व्यापारियों ने शहीद हुये व्यापारियों को अपना अपना श्रद्धसुमन अर्पित किया शहादत को याद करते हुए जिला अध्यक्ष राजेश गुप्ता ने कहा कि व्यापारियों को वह दौर भी याद है जब 3/7 बिक्रीकर फूड सेफ्टी ऐक्ट के दौरान व्यापारियों का उत्पीड़न शोषण चरम पर था व्यापारियों की कोई सुनेनेवाला नही था तब लाला विश्भर दयाल श्रद्धेय पं0श्यामबिहारी मिश्रा ने व्यापार मण्डल के नेतृत्व मे व्यापार व्यापारियों के उत्पीडन शोषण करने वाले कानून के विरोध में आन्दोलन क्षेण दिया आन्दोलन दिन व दिन बड़ा होता गया 26 मई 1979 को स्व हरिशचन्द्र अग्रवाल लखनऊ में हरिशंकर अग्रवाल बुलदशहर 18जुलाई 1986 नित्यान्द कौशिक 18 जुलाई 1986 बुलन्दशहर अशोक कुमार खण्डेलवाल पट्टी प्रतापगढ 19 जनवरी 1988 शिवशिहं पट्टी प्रतापगढ 19 जुलाई 1988 लवकेश ओवर कानपुर 15अगस्त 1990 मुन्ने मियां मारहरा एटा 23 सितम्बर 1993 अशोक राय मुफ्तीगंज जौनपुर 14 सितम्बर 1993 कमल जैन गाजियाबाद 2 अप्रैल 1995 रमेश जिन्दल कासगंज 27 अप्रैल 1995 अजय गुप्ता हरिद्वार 22 सितम्बर 1995 अमित गुप्ता मैनपुरी 1995 राकेश पवार मुजफ्फरनगर 1अप्रैल 2003 गोपाल पोद्दार अक्टूबर 2003 ऐसे कर्तव्य पथ पर पुलिस की लाठी गोली से व्यापारी हीतो के लिए शहादत दी। ऐसे व्यापारी नेताओं का व्यापारी समाज हमेशा ऋणी रहेगा।

सरकारी तंत्रों में रिश्वतखोरी चरम पर-शोभित सिंह

सोनभद्र। आजाद अधिकार सेना के बैनर तले कार्यकर्ताओं ने सोमवार को कलेक्ट्रेट पहुंचकर विभिन्न मांगों को लेकर जिलाधिकारी नामित ज्ञापन सौंपा। जिला अध्यक्ष शोभित सिंह ने ज्ञापन के माध्यम से बताया कि कमोवेश सभी सरकारी तंत्रों में रिश्वतखोरी चरम पर है। जिससे आम जनता की दिनचर्या को काफी प्रभावित कर रहा है, जिसके कारण नागरिकों की स्थिति सुधरने के बजाय और अधिक बिगड़ जा रही है। यही स्थिति राजस्व विभाग की भी है, जिसे आमतौर पर सर्वाधिक भ्रष्ट विभागों में माना जाता रहा है। जिसके कारण आमजन अत्यंत प्रभावित है। ज्ञापन के माध्यम से अवगत कराया है कि लेखपालों द्वारा वरासत दर्ज करने की प्रक्रिया में बिना सुविधा शुल्क (घुस) लिए कार्यवाही नहीं की जाती है। राजस्व न्यायालयों में दाखिल खारिज किए जाने वाले प्रकरणों सहित लगभग प्रत्येक प्रकार के प्रकरण में राजस्व परिषद के निर्देशों की अवहेलना करते हुए बिना रिश्वतखोरी के कोई अग्रिम कार्यवाही प्रक्रिया का निष्पादन नहीं किया जाता है। जाति प्रमाण पत्र/आय प्रमाण, निवास प्रमाण पत्र/खसरा जैसे प्रपत्रों के लिए अनिवार्य रुप से सुविधा शुल्क (घूस) लिया जाना, किसान सम्मान निधि के सत्यापन सहित प्रत्येक सरकारी प्रमाण पत्र हेतु के लिए सुविधा शुल्क (पूनः) लिया जाना, अवैध कब्जों (बंजर/मार्ग/आबादी/तालाब आदि) की शिकायत पर कब्जाधारक पक्ष में पैसा लेकर उसके पक्ष में झूठी आख्या लिखना-प्रधान के सांठगांठ कर अपात्रों को आवासीय भूमि/जोत योग्य भूमि/जनहित सरकारी योजनाओं आदि के आवंटन और संस्तुति के लिए धनार्जन किया जाना तथा गरीब कमजोर/घन न देने वालों तथा वास्तविक पात्र को लाभ न दिया जाना। 7-विभागीय प्रमुखों तथा जांच अधिकारी द्वारा शिकायती प्रार्थना पत्र में दिए गये सबूतों को पूरी तरह नजरनंदाज कर पार्टी जांच आख्या लगाते हुए उसे स्वीकृत किया जाना इन तथ्यों के दृष्टिगत मांग किया कि अपने स्तर से उपरोक्त वर्णित घूसखोरी और भ्रष्टाचार के संबंध में जिले के समस्त राजस्व अधिकारियों और कर्मचारियों की स्पष्ट रूप से अवगत कराते हुए ऐसे किसी भी कार्य पर पूर्ण निषेध लगाए जाने के समुचित निदेश निर्गत करने की मांग किया। घूसखोरी और भ्रष्टाचार के संबंध में प्राप्त हुए प्रत्येक शिकायती पथ को अत्यंत गंभीरता के साथ दिखवाते हुए उसका न्याय संगत निस्तारण कराए जाने की मांग किया। किसी भी मामले में शिकायती प्रार्थना पत्रों का साथ ही निस्तारण होने की दशा में इस प्रकार मतही निस्तारण करने वाले अधिकारी पर कठोरता कार्रवाई करने की कृपा आदेशों/निर्देशों का पालन किया जाय, आता है कि उपरोक्त तथ्यों की यथोचित जांच करते हुए उनका सम्पूर्ण समाधान किया जाए। इस मौके पर सुषमा सिंह, लवकुश कुमार, अरविंद जैसवाल, हरिनारायण, सुनील कुमार सिंह आदि मौजूद रहे।

मुख्यमंत्री के कर कमलों द्वारा बेसिक शिक्षा विभाग के महत्वपूर्ण कार्यक्रमों का हुआ सजीव प्रसारण

सोनभद। मुख्यमंत्री के कर कमलों द्वारा बेसिक शिक्षा विभाग के महत्त्वपूर्ण कार्यक्रमों का लोकार्पण/शिलान्यास का सजीव प्रसारण कलेक्ट्रेट सभागार में किया गया, कलेक्ट्रेट सभागार में कार्यक्रम का शुभारंभ प्रभारी मंत्री रवीन्द्र जायसवाल, जिलाधिकारी बीएन सिंह, पुलिस अधीक्षक अशोक कुमार मीणा, मुख्य विकास अधिकारी जागृति अवस्थी ने दीप प्रज्जवलन व मॉ सरस्वती के चित्र पर माल्यार्पण कर कार्यक्रम का शुभारंभ किये, इस दौरान मुख्यमंत्री के सम्बोधन का कलेक्ट्रेट सभागार में सजीव प्रसारण किया गया, इस मौके पर अनुसूचित जाति, जनजाति आयोग के उपाध्यक्ष जीत सिंह खरवार, भाजपा जिलाध्यक्ष नन्दलाल गुप्ता, ब्लाक प्रमुख सदर अजीत रावत, विधायक घोरावल के प्रतिनिधि सुरेन्द्र मौर्या, पुष्पा सिंह महिला मोर्चा अध्यक्ष, सदर विधायक प्रतिनिधि विकास मिश्रा, जिला प्रभारी भाजपा अनिल सिंह, रमेश मिश्रा, पूर्व सांसद नरेन्द्र कुशवाहा सहित सम्मानित जनप्रतिनिधिगण, अधिकारीगण एवं छात्र-छात्राओं ने मुख्यमंत्री के सम्बोधन को सुना। इस दौरान शिक्षा के क्षेत्र में बेहतर कार्य करने वाले शिक्षक/शिक्षिकाओं को प्रभारी मंत्री ने टैबलेट व प्रशस्ति पत्र देकर सम्मानित किया। इस दौरान मंत्री ने 5 स्मार्ट क्लास स्थापना, 5 आईसीटी लैब, 5 समर कैम्प, 5 निपुण सम्मान प्रमाण-पत्र का वितरण भी किये। इस दौरान प्रभारी मंत्री ने उपस्थित जनमानस को सम्बोधित करते हुए देश के प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी व मुख्यमंत्रीयोगी आदित्य नाथ जी के नेतृत्व में बेसिक शिक्षा विभाग में शिक्षा व्यवस्था बेहतर हो रही है, मुख्यमंत्री जी ने आज डी0वी0टी0 के माध्यम से छात्र-छात्राओं को ड्रेस, जूता, मोजा, स्वेटर, स्टेशनरी एवं स्कूल बैग आदि के लिए 1200 रूपये प्रति छात्र के हिसाब से बटन दबाकर धनराशि स्थान्तरित किया गया, जिसमें जनपद सोनभद्र में 1 लाख 50 हजार 653 वेरीफाई छात्रों को बैग, जूता, मोजा आदि के लिए प्रति छात्र 1200 रूपये की धनराशि स्थानान्तरित की गयी, जनपद में 11 पी0एम0 विद्यालय की स्थापना की गयी है, जनपद में कुल 4 हजार 12 टैबलेट शिक्षक/शिक्षिकाओं में वितरित किया जा रहा है, उन्होंने कहा कि लखनऊ में आयोजित कार्यक्रम में मुख्यमंत्री द्वारा प्रदेश में 38 मुख्यमंत्री कम्पोजिट विद्यालय एवं 66 अभ्युवोदय कम्पोजिट विद्यालय का शिलान्यास किया गया, उन्होंने कहा कि बच्चों के शैक्षिक स्तर के साथ ही स्वास्थ्य और खेल-कूद क्रिया कलापों को प्रभावी ढंग से बनाने हेतु 21 मई से 14 जून, 2025 तक विद्यालयों में समर कैम्प का आयोजन किया जा रहा है, उन्होंने कहा कि जुलाई माह से स्कूल चलो अभियान प्रारंभ होगा, उसमें 5 से 14 वर्ष तक के बच्चों को विद्यालय में भेजने के लिए प्रेरित किया जायेगा, इस कार्य में विद्यालय के समिति का भी सहयोग लिया जाये, मंत्री ने कहा कि आपरेशन सिन्दूर का नेतृत्व करने वाली भारत के दो बेटियों ने पाकिस्तान के नौ आतंकी ठिकानों को नष्ट करने में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभायी, आज भारत देश प्रधानमंत्री के नेतृत्व में जापान को पीछे छोड़कर विश्व की चौथी अर्थ व्यवस्था बना है, जिसमें देश की शिक्षा व्यवस्था बेहतर होना एक प्रमुख कारण है, उन्होंने शिक्षक बन्धुओं को सम्बोधित करते हुए कहा कि शिक्षक राष्ट्र के समाज के निर्माण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं, वह बच्चो को इस तरह से शिक्षा दें कि शिक्षक की पहचान एक आईडीएल टीचर के रूप में बनें। इस दौरान जिलाधिकारी ने बेसिक शिक्षा विभाग द्वारा जनपद में किये जा रहे कार्यों के सम्बन्ध में जानकारी देते हुए बताया कि निपुण भारत अभियान के अन्तर्गत कुल 1134 प्राथमिक विद्यालयों के सापेक्ष 941 विद्यालयों को निपुण घोषित किया जा चुका हैं तथा वर्ष 2024-25 में निपुण आकलन परीक्षा में जनपद उत्कृष्ट प्रदर्शन करते हुए 6वें स्थान पर पहुँच चुका है। नीति आयोग द्वारा जनपद के कुल 70 विद्यालयों में पैल लैब संचालित किया जा रहा है। इस मौके पर जिलाधिकारी ने उपस्थित मंत्री व सम्मानित जनप्रतिनिधिगण, छात्र-छात्राओं को धन्यवाद ज्ञापित किये। इस मौके पर जिला बेसिक शिक्षा अधिकारी मुकुल आनन्द पाण्डेय, जिला विद्यालय निरीक्षक श्री जय राम सिंह, अपर जिला सूचना अधिकारी श्री विनय कुमार सिंह सहित अन्य सम्बन्धितगण उपस्थित रहे।

संभव दिवस में जन शिकायतों का हुआ निस्तारण

सोनभद्र(आरएनएस)। प्रदेश सरकार द्वारा जनशिकायतों की सुनवाई तथा उनका गुणवत्तापूर्ण ढ़ंग से निस्तारण के लिये प्रत्येक सोमवार को नगरीय निकायों में समाधान दिवस सम्भव का आयोजन हेतु दिये गये आदेश के क्रम में सोमवार को नगर पालिका परिषद में विजय कुमार यादव अधिशासी अधिकारी नगर पालिका परिषद की अध्यक्षता में जनसुनवाई (सम्भव) दिवस का आयोजन किया गया। तत्क्रम में जनसुनवाई (सम्भव) दिवस में प्राप्तशिकायतें क्रमशः नगर पालिका परिषद सोनभद्र में 4, नगर पंचायत घोरावल में 2, नगर पंचायत चुर्क घुर्मा में 2, नगर पंचायत चोपन में 5, नगर पंचायत ओबरा में 3, नगर पंचायत रेनुकूट में 2, नगर पंचायत पिपरी में 4, नगर पंचायत दुद्धी में 2, नगर पंचायत डाला बाजार में 2, नगर पंचायत अनपरा मे 3, समस्त निकायों में कुल 29 शिकायतें प्राप्त हुई। जिनमें मुख्य रूप से साफ-सफाई, पेयजल व मार्ग प्रकाश, इत्यादि से सम्बन्धित सभी शिकायतों का तत्काल निस्तारण कराया गया। विजय कुमार यादव अधिशासी अधिकारी, नगर पालिका परिषद द्वारा बताया गया कि जनता की समस्याओं से रूबरू होने व उसका समय बद्ध, गुणवत्तापूर्ण निस्तारण शासन की शीर्ष प्राथमिकता पर है इस परतत्परता पूर्वक कार्यवाही की जा रही है उक्त अवसर पर सदस्यगण एवं नगर पालिका कर्मचारी आदि उपस्थित रहे।

जहरीले जंतु के काटने से बालिका की मौत

सोनभद्र। सदर तहसील क्षेत्र के ग्राम पंचायत सफरीपुर के ग्राम महेवा में बीती रात जहरीले जंतु के काटने से 8 वर्षीय किशोरी की हुई मौत परिजनों में शोक की लहर। क्षेत्र पंचायत अध्यक्ष पवन शुक्ला ने बताया कि सोमवार की सुबह आसपास के लोगों द्वारा सूचना मिला मौके पर पहुंच गया तो परिजन रविंद्र से वर्तक हुई तो उन्होंने बताया कि दो बेटी एक बेटा मां घर में बीती रात जमीन पर सोए थे तभी किसी जहरीले जंतु ने 8 वर्षीय पुत्री संध्या को काट लिया।

संक्षिप्त समाचार

पीड़ितों तक पहुंच कर मदद कर रहा उम्मीद इंडिया फाउंडेशन ट्रस्टट्ट इमरान नवाज़

विचार सूचक बिजनौर/शेरकोट के ग्राम रामसहायवाला निवासी इमरान नवाज़ द्वारा चलाया जा रहा उम्मीद इंडिया फाउंडेशन ट्रस्ट समय समय पर पीड़ित परिवारों की मदद को आगे आते हुए मदद कर रहा हैं! बीते दिनों धामपुर के मोहल्ला बंदूकचियान निवासी रईस सैफी का बस से गिर जाने पर एक्सीडेंट हुआ जिसमें उनकी दोनों टांगे कट चुकी थी!और परिवार इलाज करवाने में सक्षम नहीं था! रईस सैफी का उपचार बिजनौर के उपकार हॉस्पिटल में चल रहा था! उम्मीद इंडिया फाउंडेशन ट्रस्ट की टीम ने हॉस्पिटल पहुंचकर रईस सैफी के परिवार से मिली और उनको 27000 रु0की मदद की! तथा हॉस्पिटल से छुट्टी होकर घर पहुंचने के बाद डॉक्टर ने बताया कि इस गर्मी में रईस अहमद के जो पैर एक्सीडेंट में कटे हैं!अभी उनके ज़ख्म काफी दिनों में ठीक होंगे और ज़ख्मों में इस गर्मी में काफी दिक्कत होगी तो उम्मीद इंडिया फाउंडेशन के चेयरमैन इमरान नवाज़ और उनकी टीम ने रईस सैफी के घर पहुंचकर 16300 रु0की कीमत का इनवर्टर बैटरा रखवाया और कहा कि अब किसी हद तक इनको गर्मी से राहत मिलेगी! उम्मीद इंडिया फाउंडेशन ट्रस्ट के कार्य को देखते हुए चारों और प्रशंसा हो रही है!और अधिक संख्या में लोग जुड़ते जा रहे है! उम्मीद इंडिया फाउंडेशन ट्रस्ट के चेयरमैन इमरान नवाज़ ने सहयोग करने वाले सभी लोगों का आभार जताया और कहा कि हमारे ट्रस्ट के ऊपर भरोसा जताते हुए सहयोग करते हैं! यह हमारे लिए सबसे बड़ी बात हैं! आगे भी आप सहयोग से लगातार मदद जारी रहेगी!

अटाला मस्जिद मामले में नही हो सकी सुनवाई

जौनपुर। नगर के ढालगर टोला में स्थित शाही अटाला मस्जिद मामले में आज कोई सुनवाई नहीं हो सकी। एडीजे चतुर्थ कोर्ट से पत्रावलियां एडीजे कोर्ट पांच में स्थानांतरित कर दी गई हैं। एडीजे कोर्ट पांच के न बैठने के कारण सुनवाई स्थगित हो गई। स्वराज वाहिनी एसोसिएशन ने कोर्ट में याचिका दायर कर दावा किया है कि अटाला मस्जिद पहले अटला देवी मंदिर थी। हिंदू पक्ष ने मंदिर में पूजा की अनुमति मांगी है। उनका कहना है कि मंदिर को तोड़कर मस्जिद बनाई गई। मुस्लिम पक्ष बक्फ अटाला ने सिविल जज कोर्ट में आपत्ति दर्ज कराई। उन्होंने कहा कि स्वराज वाहिनी का दावा पोषणीय नहीं है। कोर्ट ने मुस्लिम पक्ष की आपत्ति खारिज कर दी। इसके बाद मुस्लिम पक्ष ने जिला जज कोर्ट में अपील की।जला जज ने मामला एडीजे चतुर्थ कोर्ट में भेजा। आज सोमवार को एडीजे चतुर्थ कोर्ट से पत्रावलियां एडीजे पंचम कोर्ट में स्थानांतरित कर दी गईं। अब इस मामले की अगली सुनवाई 10 जुलाई को होगी।

नौतपा के दूसरे दिन दिखा व्यापक असर

जौनपुर। नौतपा की शुरुआत रविवार से हो गयी है।दूसरे दिन सोमवार को इसका व्यापक असर रहा। दरअसल, पृथ्वी की परिक्रमा करते हुए सूर्य हर साल 25 मई को उस स्थिति में पहुंच जाता है जहां से देखने पर सूर्य के पीछे से आकाश में रोहिणी तारामंडल नजर आता है. साथ ही सूर्य इस दिन रोहिणी नक्षत्र में प्रवेश भी करता है। जानकार बताते है कि सूर्य के रोहिणी नक्षत्र में प्रवेश को नौतपा कहते हैं. यह एक खगोलीय घटना है.। ये ठीक उसी तरह से है कि जैसे आप अपना जन्मदिन साल की किसी एक अंग्रेजी कैलेंडर की तारीख को मनाते हैं. पूरे 365 या 366 दिन बाद ये फिर उसी तारीख को आ जाता है. इसी तरह से हर साल 25 मई से 2 जून के बीच के जो 9 दिन है, उसी को नौतपा नाम दिया गया है.। हिन्दी कैलेंडर में तिथियां और महीना हर साल बदलता रहता है, इस कारण इसके आधार पर मनाये जाने वाले दीपावली, होली जैसे त्यौहार की तिथियां बदलती रहती हैं, लेकिन सूर्य की परिक्रमा करती पृथ्वी की स्थिति पर आधारित त्योहार लगभग उसी दिन आ जाते हैं, जैसे मकर संक्रांति. इसी तरह नौतपा भी हर साल एक ही तारीख को आता है.। पहले चूंकि हिन्दी कैलेंडर ही प्रचलन में था और मई माह की गर्मी के बारे में सतर्क करने के लिए रोहिणी नक्षत्र पर आधारित नौतपा की धारण बताई गई होगी, ताकि आम लोग गर्मी से बचाव के लिए तैयारी कर सकें. ।जलवायु परिवर्तन के इस दौर में गर्मी और नौतपा का सीधा संबंध कई बार नहीं देखा जाता है।

निर्विरोध अध्यक्ष चुने गए संजीव साहू

जौनपुर। लायंस क्लब रॉयल के सत्र की नई कार्यकारिणी का चुनाव सम्पन्न हुआ । संस्था की आम सभा की एक बैठक नगर के एक होटल में क्लब अध्यक्ष मधुसूदन बैंकर की अध्यक्षता में हुई । नये सत्र के अध्यक्ष हेतु चुनाव अधिकारी संस्थापक अध्यक्ष अजय गुप्ता ने प्रथम उपाध्यक्ष संजीव साहू का नाम सदन में रक्खा जिसका अनुमोदन अभिताश गुप्ता व आशीष गुप्ता ने किया तत्पश्चात सभी सदस्यों ने हर्ष ध्वनि के साथ सहमति जताई इसके उपरांत निर्विरोध चुने गए अध्यक्ष संजीव साहू ने अपनी सहमति व्यक्त किया साथ ही सभी सम्मानित सदस्यों से वर्ष भर सहयोग की अपेक्षा किया ।

बेसिक शिक्षा विभाग की परियोजनाओं का भव्य लोकार्पण

जौनपुर। पूर्वांचल विश्वविद्यालय,के महंत अवैद्यनाथ सभागार में बेसिक शिक्षा विभाग की महत्वपूर्ण योजनाओं का लोकार्पण एवं शुभारंभ हुआ। लोक भवन लखनऊ से मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ जी के द्वारा समर कैंप आयोजन, आईसीटी लैब की स्थापना, स्मार्ट क्लास स्थापना एवं टैबलेट वितरण योजना जैसी कई नवीन योजनाओं का शुभारंभ किया गया, जिसका सजीव प्रसारण मुख्य अतिथि मंत्री नगर विकास, शहरी उन्मूलन, ऊर्जा एवं अतिरिक्त ऊर्जा प्रदेश सरकार अरविंद कुमार शर्मा, , विधायक रमेश चन्द्र मिश्र, डा0 आर. के. पटेल, रमेश सिंह, सदस्य विधान परिषद बृजेश सिंह पूर्व गृहराज्य मंत्री कृपाशंकर सिंह, और डा0 अजय सिंह, जिलाधिकारी डा0 दिनेश चन्द्र और मुख्य विकास अधिकारी शिक्षा विभाग के अधिकारियों, कर्मचारियों, ग्राम प्रधानों एवं अन्य जनप्रतिनिधियों द्वारा देखा गया। प्रभारी मंत्री ने कहा कि मुख्यमंत्री के नेतृत्व में शिक्षा के क्षेत्र में किये गये पहल, बदलाव, नवाचार से संबंधित प्रदर्शनी, अभिभावको को प्रेरित करना और भविष्य में इसी प्रेरणा के साथ बच्चे आगे बढे और विद्यालयों में शत-प्रतिशत नामांकन हो, यही इस कार्यक्रम का उददेश्य है। अन्य जनप्रतिनिधिगण ने भी शिक्षा के क्षेत्र में हो रहे नवाचार पर अपने विचार रखे। 06 खण्ड शिक्षा अधिकारियों (खंड शिक्षा अधिकारी जलालपुर राजेश कुमार सिंह, खंड शिक्षा अधिकारी सिरकोनी अमरेश कुमार, खंड शिक्षा अधिकारी बदलापुर अरविंद कुमार पांडेय, खंड शिक्षा अधिकारी शाहगंज बसंत कुमार शुक्ला, खंड शिक्षा अधिकारी केराकत अखिलेश कुमार झा एवं खंड शिक्षा अधिकारी धर्मापुर राजेश कुमार वैश्य) को प्रमाण-पत्र प्रदान किए गए, साथ ही 05 पीएम श्री विद्यालयों (पीएम श्री विथार, नाथूपुर, सबरहद, इब्राहिमाबाद एवं कुरनी) में उत्कृष्ट कार्य कर रहे प्रधानाध्यापकों को सम्मानित किया गया तथा 05 प्रधानाध्यापकों (प्राथमिक विद्यालय हैदरगंज, कंपोजिट विद्यालय मियापुर, कंपोजिट विद्यालय रास मंडल, प्राथमिक विद्यालय मतापुर एवं लाइन बाजार सभी नगर क्षेत्र) को टेबलेट भी वितरित किया गया। जिला बेसिक शिक्षा अधिकारी डा0 गोरखनाथ पटेल, जिला स्तरीय अधिकारी, खंड शिक्षा अधिकारी, शिक्षकगण तथा नागरिक उपस्थित रहे।

डेवलपमेंट पर स्किल डेवलपमेंट सेशन का आयोजन

जौनपुर। पूर्वांचल विश्वविद्यालय के इंजीनियरिंग संकाय में स्थापित आई ट्रिपल ई स्टूडेंट ब्रांच द्वारा वेब डेवलेपमेंट पर एक दिवसीय स्किल डेवलपमेंट सेशन का आयोजन रविवार को किया गया। यह स्टूडेंट ब्रांच विश्वविद्यालय की कुलपति प्रो. वंदना सिंह के मार्गदर्शन में अप्रैल 2025 में स्थापित की गई थी। इसका उद्देश्य छात्रों को वैश्विक तकनीकी मंच से जोड़ते हुए उनके तकनीकी और व्यावसायिक कौशल का विकास करना है। संचालन कंप्यूटर साइंस विभागाध्यक्ष डॉ. विक्रांत भटेजा और संकायाध्यक्ष प्रो. सौरभ पाल की देखरेख में हुआ। ब्रांच काउंसलर की भूमिका डॉ. दिव्येंदु मिश्र निभा रहे हैं। इस सेशन का मुख्य उद्देश्य छात्रों को वेब डेवलेपमेंट में आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (ि) की भूमिका और उसके उपयोगों के प्रति जागरूक करना था।सेशन में विषय विशेषज्ञ और आई ट्रिपल ई ब्रांच चेयर आदित्य तिवारी ने वेब डेवलेपमेंट की बारीकियों, तकनीकी टूल्स तथा ाप् एकीकरण की आधुनिक विधियों पर विस्तृत जानकारी दी। उन्होंने छात्रों को प्रोजेक्ट आधारित लर्निंग के महत्व और इंडस्ट्री डिमांड के अनुरूप कौशल विकसित करने के सुझाव दिए। संचालन कंप्यूटर साइंस विभाग की छात्रा ऋचा यादव ने किया। इस अवसर पर सृजन श्रीवास्तव, वैभव भारती, अमन सिंह, शिवेन्द्र चौधरी, अविरल, अभिषेक कुमार समेत बड़ी संख्या में इंजीनियरिंग संकाय के छात्र-छात्राएं उपस्थित रहे।

पति की लंबी आयु के लिए रखा निर्जला व्रत

जौनपुर। भारतीय संस्कृति में पेड़ों, नदियों और पहाड़ों की पूजा करना प्राचीन परंपरा रही है. वट सावित्री व्रत पूजा भी इसी के अंतर्गत आती है. जहां सुहागिन महिलाएं पति की लंबी आयु के लिए व्रत रखती हैं. इस दिन महिलाएं पति के लिए दीर्घायु और सुखी वैवाहिक जीवन के लिए निर्जला उपवास रखती है। महिलाओं सोमवार को व्रत रखकर वट सावित्री पूजा के लिए सुहागिन महिलाओं की भीड़ उमड़ पड़ी. सुबह से ही वट वृक्ष के नीचे सुहागिन महिलाएं अपने पति की दीर्घायु कामना को लेकर पूजा अर्चना व परिक्रमा की, मौली धागा बांधा और अपने पति की दीर्घायु की मंगलकामना की. वट सावित्री सुहागिन महिलाएं अखंड सौभाग्य के लिए व्रत रखती हैं। प्रत्येक वर्ष ज्येष्ठ माह की अमावस्या तिथि के दिन यह व्रत रखा जाता है. इस दिन सुहागिन महिलाएं वट वृक्ष के नीचे पूजा अर्चना करती हैं। ऐसा कहा जाता है कि सावित्री ने यमराज से लड़कर अपने कठिन तपस्या से अपने पति सत्यवान के प्राण वापस लाई थी। इसी प्रेरणा से वट सावित्री व्रत रखा जाता है और सुहागिन महिलाएं अपने पति की लंबी आयु के लिए पूजा करती हैं ताकि महिलाओं का सुहाग बना रहे.वट सावित्रि पूजा करने आई सुहागिन महिलाओं का कहना है कि आज के दिन सावित्री ने यमराज से अपने पति के लिए कठिन तपस्या कर अपने पति सत्यवान का प्राण वापस लाई थी। तभी से सुहागिन महिलाएं अपने पति की लंबी आयु और सुहाग की रक्षा के लिए वट वृक्ष के नीचे पूजा अर्चना करती हैं. । पूरे जिले एवं आसपास क्षेत्र में वट सावित्री पूजा को लेकर धूम है।

पान की खेती से किसान की कमाई में बढ़ी

जौनपुर (आरएनएस)। जिले के किसान रामजनक ने पान की खेती से अपनी आमदनी बढ़ाकर दिखाई है। वह पिछले दो साल से पान की खेती कर रहे हैं। उनकी मासिक आय 12 से 15 हजार रुपए तक पहुंच गई है।जिला उद्यान अधिकारी डॉ. सीमा सिंह राणा के अनुसार, राष्ट्रीय कृषि विकास योजना के तहत रफ्तार पान विकास योजना चलाई जा रही है। इस योजना में पान की खेती करने वाले किसानों को अनुदान दिया जाता है।विकासखंड महराजगंज के ग्राम कोल्हुआ निवासी रामजनक ने बताया कि वह पान के साथ परवल और कुंदरू की सहफसली खेती भी करते हैं। एक बीघा खेती में 50 हजार रुपए की लागत आती है। इससे 1 से 1.5 लाख रुपए तक का मुनाफा होता है।पान की खेती में बरेजा सबसे महत्वपूर्ण होता है। इसके लिए बांस की लकड़ी से एक ढांचा तैयार किया जाता है। उद्यान विभाग किसानों को समय-समय पर तकनीकी मार्गदर्शन देता है। योजना में पहले 1000 वर्ग मीटर में अनुदान की सुविधा थी। इसमें लागत का 50 प्रतिशत यानी 50,453 रुपए की सहायता मिलती है। अब छोटे किसान भी इस योजना का लाभ ले सकते हैं। 250 से 1000 वर्ग मीटर तक की खेती के लिए अनुदान मिलता है। अधिक जानकारी के लिए किसान कार्य दिवस में जिला उद्यान अधिकारी कार्यालय में संपर्क कर सकते हैं।

शाही ईदगाह में ईद उल अजहा की तैयारी शुरू

जौनपुर।(आरएनएस) शाही ईदगाह में ईद-उल-अजहा के सिलसिले में एक बैठक हाजी शमीम एडवोकेट की सदारत में हुई । इस मौके पर सेक्रेटरी मो0 शोऐब खान अच्छू ने कहा हर साल की तरह इस साल भी शाही ईदगाह में साफ सफाई और रंगाई पुताई का काम शुरू हो गया ताकि वक्त से पुरा काम हो सके और शाही ईदगाह के पूर्वी गेट पर एक पेड़ बहुत बड़ा हो गया जिससे शाही गेट का पत्थर बाहर निकल रहा कभी भी खतरा हो सकता है इस लिए आला अधिकारियों को पहले ही अवगत कराया जा चुका ताकि जल्द से जल्द समस्या का समाधान हो सके।कमालुद्दीन अन्सारी ने कहा कि जिस तरह शाही ईदगाह कमेटी ईदुल फितर में अपने काम को अंजाम बखूबी तरह से अंजाम दिया था। उसी तरह कमेटी के सभी पदाधिकारी लगे रहे और ईद उल अजहा की भी नमाज सकुशल सम्पन्न हो। और साथ ही शाही ईदगाह के गेट का काम शुरू कर दिया जाए। बैठक की अध्यक्षता कर रहे कमेटी के उपाध्यक्ष हाजी मो0 शमीम एडवोकेट ने कहा कि कमेटी के लोगों ने जो काम किया है उस काम की अवाम सराहना कर रही हैं। संचालन नेयाज ताहिर एडवोकेट ने किया ।मो0 खालिद खान, मीडिया प्रभारी अबुलखैर राईन, अजीम जौनपुरी,मो0 जफर खान राजा आमिर हसन, मो0 चांद आदि मौजूद रहे।

सिकंदर ओटीटी रिलीज- सिनेमा के बाद डिजिटल प्लेटफॉर्म पर धमाल मचाने आई सलमान खान की एक्शन ड्रामा

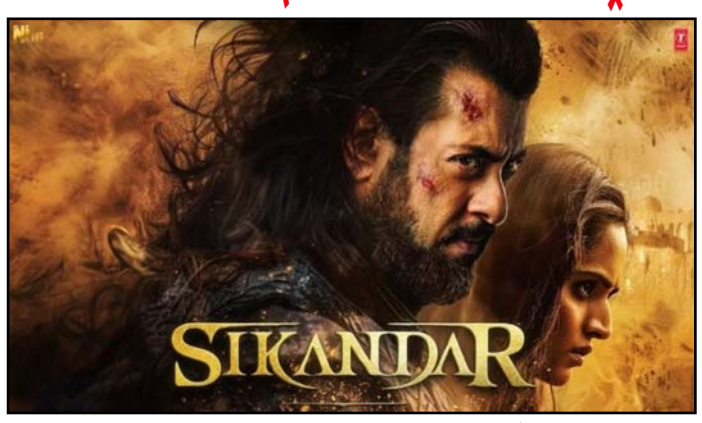

मुंबई। मुंबई। सलमान खान की एक्शन फिल्म सिकंदर ओटीटी पर दस्तक दे दी है. भाईजान ने ओटीटी पर सिकंदर की रिलीज का अनाउंसमेंट किया है. इसके लिए उन्होंने एक मजेदार नया प्रोमो भी साझा किया है, जो एक्शन से भरपूर है. सलमान ने अपने दर्शकों से अपने अनोखे अंदाज में फिल्म देखने को कहा है. सलमान खान ने अपने स्वैग अंदाज में दर्शकों को बताया कि उनकी एक्शन फिल्म सिकंदर ने ओटीटी पर दस्तक दे दी है. इसके लिए उन्होंने अपने सोशल मीडिया पर एक दमदार प्रोमो जारी किया है और कैप्शन में लिखा है,सिकंदर को अभी नेटफ्लिक्स पर देखें. प्रोमो की शुरुआत सलमान खान से होती है, जो एक लिफ्ट के अंदर अपनी फिल्म सिकंदर का गाना हम आपके बिना... गुनगुनाते हैं. उनके साथ उनकी असिस्टेंट भी हैं, जो उन्हें बताती है, सर हम अनाउंसमेंट के लिए रेडी हैं. इस पर सलमान अपनी असिस्टेंट से पूछते हैं कि उनका डायलॉग क्या है. जब तक उनकी असिस्टेंट डायलॉग के लिए पेज पलटती है वैसे ही कुछ गुंडे भेष बदलकर लिफ्ट में घुस आते हैं. सलमान खान अपनी असिस्टेंट को प्रोटेक्ट करते दिखते हैं. इस दौरान लिफ्ट के कैमरे की ओर देखते हुए सलमान खान डायलॉग मारते हुए कहते हैं, अब तक तो पीछे पड़े थे, अब आगे खड़े हैं. ऊपर वाले देख रहे हो कि नहीं? इतने में गुंडे अपने हथियार निकाल कर लेते है, जिसके बाद भाईजान का गुंडों के साथ एक्शन सीन देखने को मिलता है. लिफ्ट के बाहर उनकी टीम बेसब्री से इंतजार कर रही है. उनमें से एक पूछता है, भाई क्यों नहीं आए? दूसरा जवाब देता है, भाई दिलो में आते हैं. यह सीन सलमान के सामने आकर अपने अनाउंसमेंट के साथ समाप्त होता है. वह अपने दर्शकों को बताते हैं कि सिकंदर अब नेटफ्लिक्स पर आ गया है. एआर मुर्गादास निर्देशित सिकंदर में सलमान खान, रश्मिका मंदाना अहम भूमिका में हैं. यह फिल्म संजय राजकोट की जर्नी को दिखाता है, जो एक राजा है, जो राजनीतिक भ्रष्टाचार में फंस जाता है. वह एक भ्रष्ट राजनेता के खिलाफ न्याय के खिलाफ खड़ा रहता है. इस मास एंटरटेनर में सलमान और रश्मिका मंदाना के साथ काजल अग्रवाल, शरमन जोशी, प्रतीक बब्बर और सत्यराज भी अहम भूमिकाओं में हैं.

बॉक्स ऑफिस पर भूल चूक माफ ने लगाई छलांग, केसरी वीर की 2 दिन में हालत खराब

मुंबई। बीती 23 मई को सिनेमाघरों में 3 हिंदी फिल्में रिलीज हुईं। राजकुमार राव की भूल चूक माफ, सुनील शेट्टी की केसरी वीर और तीसरी श्रेयस तलपड़े की कंपकंपी। हालांकि, जहां भूल चूक माफ बॉक्स ऑफिस पर बढ़िया प्रदर्शन कर रही है, वहीं केसरी वीर ने 2 ही दिन में दम तोड़ दिया है। कंपकंपी भी कुछ कमाल नहीं दिखा रही है। रिलीज के दूसरे दिन तो भूल चूक माफ ने तगड़ी छलांग लगाई है। भूल चूक माफ दर्शकों का दिल जीतती नजर आ रही है। यही वजह है कि फिल्म की कमाई का ग्राफ ऊपर बढ़ रहा है। सैकनिल्क के मुताबिक, भूल चूक माफ ने 7 करोड़ रुपये की ओपनिंग की थी, पर दूसरे ही दिन इसने छलांग लगाते हुए 9 करोड़ का कलेक्शन कर लिया। इसने दो दिन में 16 करोड़ रुपये कमा लिए हैं। करण शर्मा के निर्देशन में बनी इस फिल्म में राजकुमार की जोड़ी वामिका गब्बी के साथ बनी है। जिस तरह से फिल्म ने दूसरे दिन बढ़त दिखाई है, अनुमान है कि यह वीकेंड पर अच्छा-खासा कारोबार कर लेगी। अभी इसके सामने कोई और बड़ी फिल्म नहीं हैं और जो भी रिलीज हुईं केसरी वीर और कंपकंपी, वो एकदम सुस्त नजर आ रही हैं। ओपनिंग डे पर सबसे ज्यादा कमाई करने वाली राजकुमार की फिल्मों में भूल चूक माफ दूसरे नंबर पर है। पहले नंबर पर स्त्री 2 है, जिसने 51.80 करोड़ रुपये के साथ ब्लॉकबस्टर ओपनिंग की थी। दूसरी ओर सुनील शेट्टी और सूरज पंचोली की पीरियड ड्रामा फिल्म केसरी वीर का तो बॉक्स ऑफिस पर बड़ा बुरा हाल है। पहले दिन इसने 25 लाख रुपये कमाए थे, वहीं दूसरे दिन भी फिल्म की कमाई 26 लाख में ही सिमटकर रह गई है। 2 दिन में केसरी वीर का कुल कारोबार 51 लाख रुपये ही हो पाया है। फिल्म की कहानी 14वीं शताब्दी में सोमनाथ मंदिर पर हुए हमले और बहादुर योद्धाओं की वीरता पर आधारित है(कपकपी ने पहले दिन सुनील शेट्टी की केसरी वीर को मात दे दी थी और 26 लाख रुपये कमाए थे।

सीएसके ने गुजरात को हराकर जीत के साथ किया अपने सफर का अंत

अहमदाबाद। आईपीएल 2025 के 67वें मुकाबले में चेन्नई सुपर किंग्स ने गुजरात टाइटंस को अहमदाबाद के नरेंद्र मोदी स्टेडियम में 40 रनों से हरा दिया है. इस मैच में सीएसके के कप्तान धोनी ने टॉस जीता और जीटी के कप्तान शुभमन गिल को पहले फील्डिंग करने के न्योता दिया. सीएसके ने पहले बैटिंग करते हुए 20 ओवर में 5 विकेट खोकर 230 रनों का विशाल स्कोर खड़ा किया. इसके जवाब में गुजरात टाइटंस की टीम 18.3 ओवर में 174 रनों बनाकर ऑल आउट हो गई और 38 रनों से मैच हार गई. इस मैच में शानदार प्रदर्शन के लिए डेवाल्ड ब्रेविस को प्लेयर ऑफ द मैच चुना गया. गुजरात टाइटंस के लिए पारी की शुरुआत करने के लिए साई सुदर्शन और शुभमन गिल आए. शुभमन गिल 13 रनों के निजी स्कोर पर लौट गए. इसके बाद जोस बटलर 5 और शेरफेन रदरफोर्ड 0 के निजी स्कोर पर आउट हुए. टीम के लिए सुदर्शन ने अच्छा खेल दिखाया और 28 बॉल पर 6 चौकों की मदद से 41 रनों की पारी खेली. वो टीम के टॉप स्कोरर रहे. उनके अलावा शाहरुख खान ने 19, राशिद खान ने 12, गेराल्ड कोएट्जी ने 8, अरशद खान ने 20 और राहुल तेवतिया ने 14 रनों का योगदान दिया लेकिन अपनी टीम को जीत नहीं दिला पाए और पूरी टीम 147 रनों पर ढेर हो गई. सीएसके के लिए नूर अहमद और अंशुल कम्बोज ने सबसे ज्यादा 3 विकेट हासिल किए जबकि रविंद्र जडेजा को 2 विकेट प्राप्त हुए. इससे पहले चेन्नई सुपर किंग्स के लिए 17 वर्षीय आयुष मात्रे ने 17 बॉल में 3 चौके और 3 छक्कों के साथ 34 रनों की पारी खेली. डेवोन कॉन्वे ने 35 बॉल में 6 चौके और 2 छक्कों की मदद से 50 रन बनाए.

उर्विल पटेल ने 19 बॉल पर 4 चौके और 2 छक्कों के साथ 37 रनों का योगदान दिया. सीएसके के लिए सबसे ज्यादा रन डेवाल्ड ब्रेविस ने बनाए. उन्होंने 23 बॉल में 6 चौके और 5 छक्कों की मदद से कुल 57 रन बनाए. रविंद्र जडेजा ने 21 रनों का योगदान दिया और टीम को 230 तक पहुंचाया. गुजरात के लिए प्रसिद्ध कृष्णा ने 2 और साई किशोर, राशिद खान और शाहरुख खान ने 1-1 विकेट हासिल किया.

2027 तक एजेंटिक एआई अपनाने में 383 प्रतिशत वृद्धि संभव : रिपोर्ट

नई दिल्ली। भारत में ह्यूमन रिसोर्स इंडस्ट्री के लीडर्स को उम्मीद है कि 2027 तक एजेंटिक एआई अपनाने में 383 प्रतिशत की वृद्धि दर्ज की जा सकती है। यह जानकारी सोमवार को आई एक रिपोर्ट में दी गई। एजेंटिक एआई को ऐसी तकनीक के रूप में परिभाषित किया जाता है, जो एआई एजेंटों को इस प्रकार सक्षम बनाती है कि वे मानवीय निगरानी के बिना स्वायत्त रूप से कार्य कर सकें। अमेरिकी क्लाउड-बेस्ड सॉफ्टवेयर कंपनी सेल्सफोर्स द्वारा 200 ग्लोबल ह्यूमन रिसोर्स अधिकारियों के सर्वे के आधार पर बनाई गई रिपोर्ट से पता चलता है कि डिजिटल लेबर केवल एक ट्रेंड नहीं है, बल्कि यह एक व्यावसायिक रणनीति में क्रांति है। उन्हें उम्मीद है कि अगले दो वर्षों में एआई एजेंटों को अपनाने में 383 प्रतिशत की वृद्धि होगी, जिससे उत्पादकता में 41.7 प्रतिशत की वृद्धि दर्ज की जा सकती है। निष्कर्षों से पता चलता है कि भारत में चीफ ह्यूमन रिसोर्स ऑफिसर (सीएचआरओ) अपने कर्मचारियों के लगभग एक चौथाई (24.7 प्रतिशत) को फिर से स्थापित करने की उम्मीद करते हैं क्योंकि उनके संगठन डिजिटल लेबर को अपनाते हैं। 88 प्रतिशत एचआर प्रमुखों ने एआई एजेंटों द्वारा आकार दिए गए बाजार में अधिक प्रतिस्पर्धी होने के लिए अपने कर्मचारियों को फिर से प्रशिक्षित करने की योजना बनाई है। इनमें से अधिकांश लीडर्स (81 प्रतिशत) इस बात से भी सहमत हैं कि रिलेशनशिप बिल्डिंग और सहयोग जैसे सॉफ्ट स्किल्स और भी अधिक महत्वपूर्ण होंगे क्योंकि मनुष्य एजेंटों के साथ काम करते हैं। सेल्सफोर्स के प्रेसिडेंट और चीफ पीपल ऑफिसर नथाली स्कार्डिनो ने कहा, हर इंडस्ट्री को नौकरियों को फिर से डिजाइन करना होगा। हर कर्मचारी को डिजिटल श्रम क्रांति में सफल होने के लिए नए ह्यूमन, एजेंट और व्यावसायिक कौशल सीखने की आवश्यकता होगी। रिसर्च से मिली महत्वपूर्ण जानकारी से पता चलता है कि भारत में एचआर लीडर्स का मानना है कि डिजिटल लेबर भविष्य है और इसका इंटीग्रेशन उनकी भूमिका के लिए महत्वपूर्ण है।

हैदराबाद ने धमाकेदार जीत के साथ ली विदाई कोलकाता को 110 रनों से रौंदा

नई दिल्ली। सनराइजर्स हैदराबाद ने कोलकाता नाइट राइडर्स को आईपीएल 2025 के 68वें मुकाबले में 110 रनों से हरा दिया है. दिल्ली के अरुण जेटली स्टेडियम में हेनरिक क्लासेन के धमाकेदार शतक की बदौलत एसआरएच ने पहले बल्लेबाजी करते हुए 20 ओवर में 3 विकेट खोकर 278 रन बनाए. केकेआर इस लक्ष्य का पीछा करते हुए 18.4 ओवर में 10 विकेट गंवाकर सिर्फ 168 रन बना पाई और 110 रनों से मैच हार गई. इस जीत के साथ हैदराबाद ने जीत के साथ आईपीएल 2025 का अभियान समाप्त किया है जबकि केकेआर को टूर्नामेंट से हार के बाद विदाई लेनी पड़ी है. हैदराबाद से जीत के लिए मिले 279 रनों के लक्ष्य का पीछा करने के लिए केकेआर की ओर से क्विंटन डी कॉक और सुनील नारायण ने पारी की शुरुआत की लेकिन डी कॉक 9 और नारायण 31 रन बनाकर पवेलियन लौट गए. इसके बाद अजिंक्य रहाणे ने 15 और अंगकृष रघुवंशी ने 14 रन बनाए. रिंकू सिंह 9, आंद्रे रसेल 0, रमनदीप सिंह 13 रन बनाकर चलते बने. टीम के लिए अंत में मनीष पांडे ने शानदार खेल दिखाते हुए 37 और हर्षित राणा ने 34 रनों की पारी खेली लेकिन अपनी टीम को जीत नहीं दिला पाए. हैदराबाद के लिए हर्ष दुबे, जयदेव उनादकट और ईशान मलिंगा ने सबसे ज्यादा 3-3 विकेट हासिल किए. इस मैच में हेनरिक क्लासेन ने शतकीय पारी खेली. उन्होंने 39 बॉल पर 7 चौके और 9 छक्कों के साथ 105 रनों की नाबाद पारी खेली. वो हैदराबाद के लिए सबसे ज्यादा रन बनाने वाले बल्लेबाज रहे. उनके अलावा इस मैच में हैदराबाद के लिए अभिषेक शर्मा ने 16 बॉल में 4 चौके और 2 छक्कों के साथ 32 रन बनाए. ट्रेविस हेड ने 40 बॉल में 6 चौके और 6 छक्कों के साथ 76 रनों की पारी खेली. ईशान किशन 29 और अनिकेत वर्मा ने 12 रनों का योगदान दिया. केकेआर की ओर से सुनील नारायण ने 2 और वैभव अरोड़ा ने 1 विकेट चटकाया. इस मैच में क्लासेन ने दो खास उपलब्धि हासिल की वो आईपीएल में सनराइजर्स हैदराबाद के लिए सबसे तेज अर्धशतक लगाने वाले तीसरे बल्लेबाज बन गए.

शेयर बाजार में तेजी का माहौल निफ्टी 25 हजार के पार

नई दिल्ली। अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रम्प के यूरोपीय संघ (ईयू) के साथ चल रही व्यापार वार्ता की समय सीमा बढ़ाए जाने के वैश्विक स्तर पर व्यापार तनाव घटने की उम्मीद में स्थानीय स्तर पर हुई चौतरफा लिवाली की बदौलत शेयर बाजार आज लगातार दूसरे दिन चढ़ गया। बीएसई का तीस शेयरों वाला संवेदी सूचकांक सेंसेक्स 455.37 अंक की छलांग लगाकर चार कारोबारी सत्र के बाद 82 हजार अंक के मनोवैज्ञानिक स्तर के पार 82,176.45 अंक और नेशनल स्टॉक एक्सचेंज (एनएसई) का निफ्टी 148.00 अंक की तेजी के साथ 25 हजार अंक के पार 25001.15 अंक पर बंद हुआ। इसी तरह बीएसई का मिडकैप 0.56 प्रतिशत उछलकर 45,111.47 अंक और स्मॉलकैप 0.48 प्रतिशत की मजबूती के साथ 51,766.72 अंक पर पहुंच गया। इस दौरान बीएसई में कुल 4267 कंपनियों के शेयरों में कारोबार हुआ, जिनमें से 2301 में लिवाली जबकि 1772 में बिकवाली हुई वहीं 194 में कोई बदलाव नहीं हुआ। इसी तरह एनएसई में कारोबार के लिए रखी गई कुल 2982 कंपनियों के शेयरों में से 1735 में तेजी जबकि 1173 में गिरावट रही वहीं 74 में टिकाव रहा। बाजार विश्लेषकों के अनुसार, अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रम्प ने यूरोपीय संघ के साथ चल रही व्यापार वार्ता की समयसीमा बढ़ाने का निर्णय लिया है। इस कदम से संभावित नए व्यापार युद्ध की आशंका कम हो गई है, जिसने हाल के दिनों में वैश्विक निवेशकों की चिंता बढ़ा दी थी। विश्लेषकों का मानना है कि यह फैसला विश्व बाजारों में स्थिरता बनाए रखने में मदद करेगा और निवेशकों की भावना को सहारा देगा। ट्रम्प प्रशासन द्वारा उठाया गया यह कदम संकेत देता है कि अमेरिका फिलहाल विवाद के बजाय समाधान की दिशा में बढ़ना चाहता है। इनके अलावा भारत के दुनिया की चौथी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था बनने की खबर बाजार के लिए निकट भविष्य में मनोबल बढ़ाने वाली होगी। यह न केवल वैश्विक निवेशकों को आकर्षित करेगा, बल्कि घरेलू स्तर पर भी निवेश भावना को मजबूत करेगा। विशेषज्ञों के अनुसार, भारत की यह प्रगति मजबूत आर्थिक बुनियाद, सतत सुधारों और वैश्विक अनिश्चितताओं के बीच स्थिर विकास दर का परिणाम है। ऐसे समय में जब कई विकसित अर्थव्यवस्थाएं सुस्ती से जूझ रही हैं।

एवोकाडो खरीदते समय इन 5 बातों का रखें ध्यान, सही होगा चयन

लाइफस्टाइल। एवोकाडो एक पौष्टिक फल है, जो कई पोषक तत्वों से भरपूर होता है। इसे खरीदते समय सही चयन करना बहुत जरूरी है ताकि आपको पका हुआ और स्वादिष्ट फल मिल सके। इस लेख में हम आपको एवोकाडो खरीदते समय ध्यान रखने योग्य पांच महत्वपूर्ण बातें बताएंगे, जिससे आप हमेशा सही एवोकाडो का चयन कर सकें और अपने खान-पान का मजा दोगुना कर सकें।इन सुझावों को अपनाकर आप अपने एवोकाडो का सही उपयोग कर पाएंगे।

रंग पर ध्यान दें

एवोकाडो खरीदते समय उसके रंग पर ध्यान देना बहुत जरूरी है पका हुआ एवोकाडो गहरे हरे या काले रंग का होता है, जबकि अधपका एवोकाडो हल्के हरे रंग का होता है। हरे रंग का एवोकाडो कुछ दिनों बाद पकता है इसलिए अगर आप तुरंत इस्तेमाल करना चाहते हैं तो गहरे रंग वाला एवोकाडो चुनें। इसके अलावा अगर आप लंबे समय

तक रखना चाहते हैं तो हल्के हरे रंग वाला एवोकाडो बेहतर रहेगा।

छिलके की स्थिति देखें

एवोकाडो के छिलके की स्थिति भी अहम होती है।

अगर छिलके पर कोई निशान या खरोंच हो, तो समझ जाइए कि वह फल जल्दी खराब हो सकता है। इसलिए हमेशा बिना निशान वाला एवोकाडो चुनें। इसके अलावा अगर एवोकाडो बहुत ज्यादा मुलायम हो तो उसे न खरीदें क्योंकि ऐसा फल पहले से ही पका हुआ होता है और उसे जल्दी इस्तेमाल करना पड़ता है। सही एवोकाडो चुनने के लिए छिलके की स्थिति का ध्यान रखना जरूरी है।

आकार पर गौर करें

एवोकाडो का आकार भी उसके पकने का संकेत देता है। आमतौर पर बड़ा एवोकाडो पका हुआ होता है, जबकि छोटा एवोकाडो अधपका हो सकता है।हालांकि, इसका हमेशा यही मतलब नहीं होता कि छोटा फल अधपका ही होगा। कुछ बार छोटे फल भी पके हुए मिल सकते हैं इसलिए आकार के साथ-साथ रंग और छिलके की स्थिति पर भी ध्यान दें।इस तरह आप सही एवोकाडो का चयन कर सकते हैं और अपने खाने का मजा बढ़ा सकते हैं।

गंध का अनुभव करें

एवोकाडो खरीदते समय उसकी गंध का अनुभव करना भी एक अच्छा तरीका हो सकता है। पके हुए एवोकाडो से हल्की मीठी खुशबू आती है, जबकि अधपके एवोकाडो में कोई खास गंध नहीं होती। अगर आपको किसी फल से अच्छी खुशबू आ रही हो तो वह पका हुआ माना जा सकता है। इसके अलावा गंध से यह भी पता चल सकता है कि फल कितनी देर तक ताजा रहेगा।

स्वामी प्रकाशक मुद्रकः स्वाति के लिए राष्ट्रीय विचार प्रकाशन द्वारा 68/86 छितवापुर, गांधी नगर, खटिकाना लखनऊ से मुद्रित एवं 110 कल्याणी देवी मन्दिर रोड, उन्नाव से प्रकाशित
सम्पादक धीरेन्द्र प्रताप तिवारी मो.न.- 09935020921 vicharnews@gmail.com htt:vicharsuchak.in/ (सम्पूर्ण विवाद उन्नाव न्याय क्षेत्र से ही स्वीकार्य)

संक्षिप्त समाचार

*प्रभारी मंत्री नरेंद्र कश्यप 28 मई को जनपद भ्रमण पर पधार रहे

मैनपुरी राज्य मंत्री स्वतंत्र प्रभार पिछड़ा वर्ग कल्याण एवं दिव्यांगजन सशक्तीकरण विभाग, जनपद के प्रभारी मंत्री नरेंद्र कश्यप दि. 28 मई को जनपद भ्रमण पर पधार रहे हैं, मा. मंत्री जी पूर्वान्ह 11 बजे रानी अहिल्याबाई होल्कर के जन्म दिवस के अवसर पर आयोजित पंचायत प्रतिनिधियों के सम्मेलन में सम्मिलित होंगे, दोपहर 12.30 बजे से विकास कार्यों एवं कानून व्यवस्था की कलैक्ट्रेट सभागार में समीक्षा करेंगे, अपरान्ह 03.30 बजे निर्माणाधीन टाइप-4 आवास के कार्यों का निरीक्षण करने के उपरांत अपरान्ह 04 बजे लखनऊ के लिए प्रस्थान करेंगे।

मुख्य चिकित्सा अधीक्षक ने सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र गोदना का किया औचक निरीक्षण

मैनपुरी मुख्य चिकित्सा अधिकारी डॉक्टर आरसी गुप्ता ने सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र गोदना घिरोर का औचक निरीक्षण किया निरीक्षण के समय डॉक्टर अपराजिता सिंह मेडिकल ऑफिसर डॉक्टर कीर्ति यादव मेडिकल ऑफिस ऑफिसर प्रदीप कुमार स्टाफ नर्स आरती स्टाफ नर्स अंजू देवी स्टाफ नर्स प्रीति राजपूत लैब टेक्नीशियन कुमारी संगीता लैब टेक्नीशियन धर्मवीर सिंह स्वास्थ्य श्रीमती रेणु स्वीपर चौकीदार अनुपस्थित मिले सभी का एक दिन का वेतन काटते हुए स्पष्टीकरण प्राप्त करने के निर्देश चिकित्सा अधीक्षक डॉक्टर प्रवीण कुमार यादव को दिए मुख्य चिकित्सा अधिकारी ने चिकित्सा अधीक्षक से आभा आईडी के बारे में जानकारी ली और इसको बनवाने की निर्देश दिए ओपीडी आईपीडी लैब वार्ड आदि का निरीक्षण कर व्यवस्थाएं दुरुस्त रखने के निर्देश दिए वार्ड में गंदगी मिलने पर कड़ी नाराजगी व्यक्त करते हुए तुरंत व्यवस्थाएं दुरुस्त करने के निर्देश दिए इस अवसर पर डॉ प्रवीण कुमार यादव चिकित्सा अधीक्षक प्रभारी जिला स्वास्थ्य शिक्षा अधिकारी रविंद्र सिंह गौर फार्मासिस्ट रविंद्र यादव डॉक्टर नीत डॉ नीतू यादव डॉक्टर अंकित यादव आदि मौजूद रहे।

पुलिस अधीक्षक ने नवीगंज चौकी का किया निरीक्षण जनपद सीमा पर बनी पुलिस चौकी पर चौकन्ना रहे पुलिस

मैनपुरी के थाना क्षेत्र बेवर के अंतर्गत जनपद कन्नौज और मैनपुरी की सीमा पर बनी नवीगंज चौकी का पुलिस अधीक्षक गणेश प्रसाद शाहा एवं अपर पुलिस अधीक्षक शहर अरुण कुमार सिंह द्वारा निरीक्षण किया गया।निरीक्षण दौरान उन्होंने आवश्यक दिशा निर्देश दिए।बताते चलें कि अभी हाल में नवीगंज चौकी क्षेत्र में गौरक्षक टीम की सूचना पर मांस भरे कंटेनर को पुलिस ने कब्जे में लिया था।सोमवार को पुलिस अधीक्षक गणेश प्रसाद शाहा ने नवीगंज चौकी पर औचक निरीक्षण किया निरीक्षण दौरान उन्होंने कहा कि नवीगंज पुलिस चौकी महत्वपूर्ण चौकी है क्योंकि ये जनपद की सीमा पर स्थित है इसलिए तैनात स्टाफ पूरी तरह से सतर्क रहकर अपनी ड्यूटी करे।उन्होंने हाल में पकड़े गए मांस भरे कंटेनर का भी निरीक्षण कर आवश्यक जानकारी जुटाई।साथ ही चौकी परिसर के बाहर पड़ी जमीन के संबंध में भी जानकारी ली।उन्होंने कहा चौकी की जगह अच्छी है, विस्तार के लिए कोशिश करेंगे जिससे नवीगंज को थाना बनाया जा सके।नवीगंज क्षेत्र से दर्जनों गांव जुड़े हुए हैं।इस मौके पर एसपी सिटी अरुण कुमार सिंह, सीओ सत्यप्रकाश शर्मा,वरिष्ठ उपनिरीक्षक सुखवीर सिंह मौजूद रहे।

जीजीआईसी में छात्राओं को सीपीआर व आकस्मिक उपचार की जानकारी दी

विचार सूचक

नहटौर। राजकीय बालिका इंटर कॉलेज में चल रहे समर कैंप के अन्तर्गत एमएम क्लिनिक के एमडी डॉ मौ राशिद ने छात्राओं को सीपीआर एवं आकस्मिक उपचार की जानकारी दी। सोमवार को राजकीय बालिका इंटर कॉलेज में चल रहे समर कैंप में एमएम क्लिनिक के एमडी डॉ मौ राशिद ने स्कूल में पहुंचकर छात्राओं को सीपीआर की जानकारी दी। साथ ही उन्होंने अचानक आने वाले आकस्मिक उपचार की जानकारी दी। उन्होंने छात्राओं को बताया कि सीपीआर एक जीवन रक्षक तकनीक है जिसका उपयोग आपातकालीन स्थितियों में किया जाता है जब किसी की सांस या दिल की धड़कन रुक जाती है। कुछ मामलों में, इसमें मुंह से मुंह के ज़रिए सांस लेना शामिल होता है ताकि चिकित्सा सहायता आने तक शरीर में ऑक्सीजन का संचार बना रहे। साथ ही उन्होंने आकस्मिक उपचार में काम आने वाली दवाइयों की जानकारी दी ओर अचानक आने वाले हार्ट अटैक के कारणों को समझाया। इसके अलावा छात्राओं को समर कैंप में बढ़ चढ़कर प्रतिभाग करने की अपील की गई। इस अवसर पर हाफिज अतहर हसन,मौ सादिक, प्रधानाचार्या बबीता रानी,संध्या शर्मा, डौली रानी,रूमाना, इकरा रहमान, रुकय्या परवीन,भोपाल सिंह आदि उपस्थित रहे।

बैल की टक्कर से बाइक सवार घायल

विचार सूचक नहटौर। बैल की टक्कर से बाइक सवार दंपति व पुत्री घायल हो गई। घायलों को सीएचसी में भर्ती कराया गया। प्राप्त समाचार के अनुसार मंडावर क्षेत्र के गांव मानसापुर निवासी नरपाल सिंह पुत्र ओमप्रकाश सिंह उम्र 45 वर्ष अपनी पत्नी ऊषा उम्र 42 वर्ष तथा पुत्री काजल उम्र 9 वर्ष को साथ लेकर अपनी ससुराल नहटौर क्षेत्र के गांव कमालपुर पहाड़पुर आया था। बताया जाता है कि वह शाम के समय तीनों दवाई लेने के लिए वहां से हल्दौर जा रहे थे। इसी दौरान हल्दौर मार्ग पर नहर के निकट उनकी बाइक को सड़क किनारे चर रहे बैल ने टक्कर मार दी। जिससे उनकी बाइक अनियंत्रित होकर गिर गई। घटना में दंपती व उनकी बेटी घायल हो गई। घायलों को सीएचसी में भर्ती कराया गया।

आमिर निगार को दिल्ली में मिला नेल्स आर्ट बेस्ट अवार्ड

कोरियोग्राफर आमिर निगार दिल्ली सहित बड़े शहरों में कर रहे धामपुर का नाम रोशन

(मास्टर अकील अहमद जिला प्रभारी)विचार सूचक दिल्ली के होटल रेडिसन ब्लू मैपल गोल्ड में आयोजित शिज़ बी लिमिटेड प्राइवेट कंपनी के सम्मान समारोह में में प्रसिद्ध कोरियोग्राफर आमिर निगार को टीवी कलाकार नीलू वाघेला द्वारा नेल्स आर्ट बेस्ट शअवार्ड देकर सम्मानित किया।

पीरागढ़ी मेट्रो स्टेशन के पास पश्चिम विहार स्थित होटल रेडिसन ब्लू मेपल गोल्ड दिल्ली में कविता डगर की अध्यक्षता तथा कार्यक्रम की डायरेक्टर गीता डागर के संचालन में आयोजित कार्यक्रम में टीवी अभिनेत्री नीलू वाघेला द्वारा धामपुर निवासी कोरियोग्राफर आमिर निगार को नेल्स आर्ट बैस्ट अवार्ड से सम्मनित किया गया। निगार को मेरठ में राजहंस बैंकेट होल म नवीना बोले दुवारा सामाजिक कार्य पुरस्कार से भी सम्मानित किया गया इस अवसर पर सेलिब्रिटी मेकअप आर्टिस्ट शीना सिद्दीकी, सेलिब्रिटी मेकअप आर्टिस्ट सीमा गुप्ता, तौसीर, आशु मेकअप आर्टिस्ट सुंदरयम ब्यूट सेंटर, डॉ सबा उस्मानी, , पूनम चौहान, नितेश सैनी, रोहित, राहुल आदि मौजूद रहे।

कार्यक्रम में अनिल अरोड़ा, राजेश आनंद, गौरव जैन, जुनैद खान, हरजिंदर कौर, नदीम पत्रकार, निशा सिसौदिया, मॉडल खुशी शेख, राज डगर आदि शामिल रहें। शीज़ बी लिमिटेड प्राइवेट कंपनी की डायरेक्टर गीता डागर ने कार्यक्रम की सफलता पर सभी अतिथियों का आभार व्यक्त किया।

युवाओं को नशे के दुष्प्रभावों के प्रति जागरूक करने हेतु विद्यालयों में आयोजित करायें जायें कार्यकम : मुख्य विकास अधिकारी

(रामजी लाल गोस्वामी)

मैनपुरी मुख्य विकास अधिकारी नेहा बंधु ने नारको को-ऑर्डिनेशन सेंटर की जिला स्तरीय समिति की बैठक में मादक पदार्थों का सेवन न करने संबंधी शपथ दिलाते हुए कहा कि हमारे देश में विशेष रूप से युवाओं के बीच नशीली दवाओं का दुरुपयोग बढ़ता जा रहा है और यह चिंता का विषय है, हम सबको नशीली दवाओं के दुरुपयोग की रोकथाम में सहयोग करना होगा, किसी भी प्रयोजन के लिए किसी भी प्रकार से हानिकारक, अवैध पदार्थों का सेवन न करने, प्रत्येक व्यक्ति, विशेषत: युवाओं को प्रोत्साहित करते हुए नशीली दवाओं के दुष्प्रभावों के संबंध में जागरूकता पैदा करनी होगी ताकि भारत का युवा वर्ग नशामुक्त जीवन-यापन कर सके और वह समाज के रचनात्मक एवं महत्वपूर्ण सदस्य बन सके, सभी प्रण लें कि नशे से दूर रहेंगे और स्वस्थ जीवन-यापन करेंगे। उन्होने कहा कि बड़ी संख्या में लोग जानकारी के बावजूद तंबाकू से बने उत्पादों का सेवन करते हैं, धीरे-धीरे यह शौक बुरी लत में बदल जाता है, सिगरेट, बीड़ी, जर्दा, गुटखा, खैनी, हुक्का, चिलम से सभी को बचना होगा, तंबाकू से बने उत्पादों का सेवन करने वाले लोगों विशेषतौर पर युवा पीड़ी को बुरी आदत से बचने के लिए प्रेरित करना होगा।

सी.डी.ओ. ने कहा कि तम्बाकू के खतरे को नियंत्रित करने के प्रयासों के बावजूद

तम्बाकू के इस्तेमाल की व्यापकता बच्चों और किशोरों के बीच खतरनाक अनुपात में बढ़ रही है. बच्चों में जागरूकता के उद्देश्य से समस्त विद्यालयो में प्रार्थना सभा में छात्रों को तम्बाकू अन्य नशों से होने वाले दुष्प्रभावों के बारे में बताया जाये, विद्यालय के आस-पास कोई असामाजिक तत्व छात्रों को नशे की सामग्री, तम्बाकू आदि बाकू आदि का सेवन करने के लिए प्रेरित न करे, इसकी भी निगरानी की जाये। उन्होने कहा कि नारकोटिक्स पदार्थों की तस्करी के तरीकों, अन्तर्राज्यीय कनेक्शन वाले अभियोगों की विवेचनाओं का सघन पर्यवेक्षण किया जाये, नारकोटिक्स ड्रग की पहचान हेतु आवश्यक उपकरणों की उपलब्धता सुनिश्चित की जाये।बैठक में अपर जिलाधिकारी न्यायिक ज्ञानेश्वर प्रसाद, अपर पुलिस अधीक्षक अरूण कुमार, मुख्य चिकित्साधिकारी, डा. आर.सी. गुप्ता, प्रभागीय निदेशक समाजिक वानिकी संजय मल्ल, जिला आबकारी अधिकारी दिनेश कुमार, जिला समाज कल्याण अधिकारी अशोक कुमार, जिला कृषि अधिकारी डा. सूर्य प्रताप, बाल संरक्षण अधिकारी अल्का मिश्रा सहित अन्य सम्बन्धित अधिकारी आदि उपस्थित रहे।

झंडापुर स्थित वीवी पेट वेयरहाउस तथा कलेक्ट्रेट परिसर स्थित ईवीएम संरक्षित स्ट्रांग रूम का जिलाधिकारी ने कियाा मासिक निरीक्षण

(मास्टर अकील अहमद जिला प्रभारी)

विचार सूचक बिजनौर जिलाधिकारी/जिला निर्वाचन अधिकारी जसजीत कौर द्वारा आज अपराहन 03:30 बजे झंडापुर स्थित वीवी पेट वेयरहाउस तथा कलेक्ट्रेट परिसर स्थित ईवीएम संरक्षित स्ट्रांग रूम का मासिक निरीक्षण किया गया। निरीक्षण के दौरान सहायक जिला निर्वाचन अधिकारी प्रमोद कुमार, राजनीतिक दलों के प्रतिनिधि भाजपा से धीर सिंह, कांग्रेस से नीरज चौधरी, बसपा मोहम्मद सिद्दीक तथा सपा से जिला अध्यक्ष शेख जाकिर हुसैन एवं प्रवक्ता अखलाक़ पप्पू सहित अन्य अधिकारी एवं कर्मचारी मौजूद थे। जिलाधिकारी श्रीमती कौर द्वारा सर्वप्रथम झंडापुर स्थित वीवी पेट वेयरहाउस का विस्तृत निरीक्षण किया। उन्होंने सिक्योरिटी, विद्युत व्यवस्था, साफ सफाई सहित अन्य व्यवस्थाओं का जायजा लिया, इस अवसर पर सीसीटीवी कंट्रोल रूम संचालित पाए गए। निरीक्षण के दौरान ईवीएम के रख रखाव व सुरक्षा के दृष्टिगत सभी राजनीतिक दलों के प्रतिनिधियों ने अपनी सहमति जताई और सुरक्षा के इंतजाम देख कर संतोष व्यक्त किया। तदोपरांत उन्होंने कलेक्ट्रेट परिसर स्थित निरीक्षण के दौरान ईवीएम स्ट्रांग रूम के बाहर लगे सील्ड तालों सहित ईवीएम सुरक्षा, अग्नि सुरक्षा, विद्युत व्यवस्था एवं अन्य सभी प्रकार की व्यवस्थाओं का जायज़ा लिया, सभी व्यवस्थाएं सुचारू रूप से संचालित पाई गईं।

सांसद प्रतिनिधि ने अलीगढ़ में मीट व्यापारियों पर हुए हमले की निंदा की

नहटौर। आज़ाद समाज पार्टी के सांसद प्रतिनिधि शाकिर प्रधान ने अलीगढ़ में मारपीट को लेकर मीट व्यापारियों के साथ हुई घटना की निंदा की है। साथ ही उन्होंने घटना को अंजाम देने वाले आरोपियों के खिलाफ कड़ी से कड़ी सजा देने की मांग की है। आज़ाद समाज पार्टी के नहटौर विधानसभा के सांसद प्रतिनिधि शाकिर प्रधान ने एक बयान में कहा कि थाना हरदुआ गंज के अभहदादपुर बोनेपुर चौराहे के पास मीट व्यापारियों के साथ मारपीट करना हैवानियत को दर्शाता है। उन्होंने कहा कि व्यापारी अकील, कदीम अरबाज और ड्राइवर अलीगढ़ मीट फैक्ट्री से माल खरीदकर सप्लाई के लिए जा रहे थे। इस फैक्ट्री का बिल भी उनके पास था। लेकिन देश में अराजकता फैलाने वाले संगठन के लोगों ने उन पर जानलेवा हमला किया।जो निंदनीय है। उन्होंने कहा कि प्रदेश की कानून व्यवस्था चौपट हो गई है। उन्होंने कहा कि देश भाईचारे, कानून व संविधान से चलेगा। उन्होंने कहा कि खुलेआम अपराधी घटना को अंजाम दे रहे हैं। कुछ संगठनों की हठधर्मी से देश नहीं चलेगा। उन्होंने कहा कि दलितों और मुस्लिमों पर इस तरह के हमले करना आम बात हो गई है। उन्होंने कहा कि इस तरह के लोग देश में नफरत फैला रहे है। गंगा जमुना तहजीब से चलने वाले देश को उस तरह लोग नफरत की ओर ले जा रहे है। उन्होंने कहा कि ऐसी घटनाओं को अंजाम देने वाले कोई भी हो, उनके खिलाफ कड़ी से कड़ी सजा मिलनी चाहिए। जिससे आने वाले समय में इस तरह की कोई घटना न घट सके ओर कोई भी व्यक्ति इस तरह की हरकत करने से पहले हजार बार सोचे ।

वन डे वर्कशॉप ऑन यूज़ ऑफ स्टेटिस्टिकल टूल इन रिसर्च

(मास्टर अकील अहमद जिला प्रभारी)विचार सूचक बिजनौर

रानी भाग्यवती देवी महिला महाविद्यालय बिजनौर में प्राचार्या प्रोफेसर पारुल त्यागी के दिशानिर्देशन में गृह विज्ञान विभाग द्वारा रिसर्च मेथोडोलॉजी की वर्कशॉप का आयोजन किया गया जिसमें एक्सटर्नल रिसोर्स पर्सन के रूप में डॉक्टर कनक चौहान (एस0बी0डी0 कॉलेज धामपुर) तथा इंटरनल रिसोर्स पर्सन के रूप में श्री प्रताप सिकदर उपस्थित रहे अपने व्याख्यान में डॉक्टर कनक चौहान ने गृहविज्ञान के शोध में इस्तेमाल होने वाले विभिन्न प्रकार के स्टेटिस्टिकल टूल के बारे में बताया तथा शोध में उनके उपयोग पर भी प्रकाश डाला श्री प्रताप सिकदर ने पैरामीट्रिक एंड नॉन पैरामीट्रिक टेस्ट के विषय में विस्तार से बताया उपरोक्त कार्यक्रम में गृह विज्ञान में प्रयोग होने वाली रिसर्च मेथोडोलॉजी एवं उसमें प्रयोग होने स्टेटिस्टिकल टूल पर विस्तार से प्रकाश डाला गया **कार्यक्रम का सफल संचालन विभाग की असिस्टेंट प्रोफ़ेसर डॉक्टर मीनू सिरोही ने किया** कार्यक्रम के अंत में विभाग की विभागाध्यक्ष श्रीमती शिखा मालवीय ने धन्यवाद ज्ञापित किया7 इस कार्यक्रम में विभाग की सभी शिक्षिकाओं जिसमें श्रीमती पूजा कुमार, श्रीमती रेनू राजपूत ,श्रीमती स्वाति चौधरी,कुमारी अलीशा, कुमारी मीनू ,लैब असिस्टेंट इंदु शर्मा और श्री माधव का पूर्ण सहयोग रहा ।

पिता और दो पुत्रों की निर्मम हत्या, फैली दहशत

जौनपुर। एक साथ तीन हत्याओं से दहशत फैल गयी, बदमाशों ने बाप और दो बेटो की निर्मम हत्या कर दी। जिले के जफराबाद थाना क्षेत्र के नेवादा बाईपास पर उस वक्त सनसनी फैल गई, जब एक वेल्डिंग वर्कशॉप से एक ही परिवार के तीन लोगों के खून से लथपथ शव बरामद हुए। मृतकों की पहचान वर्कशॉप के मालिक गुड्डू कुमार, उनके भाई यादवीर और पिता लालजी के रूप में हुई है। तीनों की सर पर हमला किया गया जिससे उनकी मौत हो गई। घटना की जानकारी जब मृतकों के परिजनों व रिश्तेदारों को हुई तो वे भी मौके पर पहुंच गये और पुलिस द्वारा शवों को बिना उन्हें दिखायें पोस्टमार्टम हेतु भेज दिये जाने से नाराज परिजनों व रिश्तेदारों ने जमकर बवाल मचाया । पुलिस अधीक्षक डॉक्टर कौस्तुभ मौके पर पहुंचे और बताया कि प्रथम दृष्टया मामला हत्या का प्रतीत होता है। घटनास्थल से चार मोबाइल फोन और एक हथौड़े जैसा घातक हथियार बरामद हुआ है। एडीजी जोन वाराणसी पीयूष मोर्डिया व पुलिस उपमहानिरीक्षक वाराणसी परिक्षेत्र, वाराणसी वैभव कृष्ण द्वारा थाना जफराबाद

नेवादा बाईपास पर स्थित लालजी वेल्डिंग वर्कशाप पर हुई तीन हत्याओं के घटनास्थल का निरीक्षण किया गया और घटना के शीघ्र अनावरण हेतु सम्बंधित को निर्देशित किया । परिवार ने शक जताया है कि कुछ लोगों से लंबे समय से विवाद चल रहा था, जिसे पुलिस अब गंभीरता से जांच रही है।इस तिहरे हत्याकांड के खुलासे के लिए आठ पुलिस टीमों का गठन किया गया है। फिलहाल जौनपुर दहशत के साए में है और लोग इस निर्मम हत्याकांड को लेकर सहमे हुए हैं। पुलिस ने भरोसा दिलाया है कि जल्द ही आरोपियों को सलाखों के पीछे पहुंचाया जाएगा। क्षेत्र में चर्चा है किजफराबाद थानाध्यक्ष से यहां की कमान नहीं संभल रही है। नेवादा बाईपास पर ट्रिपल मर्डर से हड़कंप, कानून-व्यवस्था पर उठे गंभीर सवाल । इस घटना ने पूरे जनपद को हिला कर रख दिया है। एक ही परिवार के तीन लोगों पिता लालजी व उनके दो पुत्रों गुड्डू कुमार और यादवीरकी लोहे की रॉड और हथौड़े से बेरहमी से हत्या कर दी गई। वारदात इतनी नृशंस थी कि शवों की हालत देखकर हर कोई सन्न रह गया।मृतक परिवार 'लालजी वेल्डिंग वर्कशॉप' के नाम से नेवादा बाईपास पर एक प्रतिष्ठान चलाता था।

दिव्यांगजनों एवं दिव्यांग बच्चों के चिन्हांकन शिविर का आयोजन प्रत्येक विकासखण्ड कार्यालय परिसर में किया जायेगा

विचार सूचक *बिजनौर

मुख्य विकास अधिकारी पूर्ण बोरा ने जानकारी देते हुए बताया कि दिव्यांगजनों एवं दिव्यांग बच्चों के चिन्हांकन, उनके समग्र पुनर्वासन एवं उन आवश्यकतानुसार नि:शुल्क कृत्रिम अंग / सहायक उपकरण के लिए दिव्यांगजनों को ट्राईसाइकिल, व्हील चेयर, वैसाखी, कान की मशीन, लेप्रो किट, एम0आर0 किट एवं स्मार्ट केन आदि सहायक उपकरण को दिये जाने के लिए आवेदन भराये जायेगें एवं पात्र दिव्यांग / कुष्ठावस्था पेश पेंशन में आधार प्रमाणीकरण, पेंशन में फैमिली आई0डी0, यू0डी0आई0 कार्ड, दिव्यांगजन शादी विवाह प्रोत्साहन पुरस्कार योजना, दुकान संचालित योजना, शल्य चिकित्सा कॉक्लियर इम्पलान्ट करेक्टिव सर्जरी योजना के अन्तर्गत चिन्हांकन शिविर का आयोजन प्रत्येक विकासखण्ड कार्यालय परिसर में किया जायेगा। उन्होंने आयोजित होने वाले शिविरों के रोस्टर की तिथिवार जानकारी देते हुए बताया कि आगामी 3 जून को नजीबाबाद 4 जून,2025 को किरतपुर, 5 जून स्यौहारा, 6 जून हल्दौर, 10 जून अफजलगढ़, 11 जून मोहम्मदपुर देवमल, 12 जून कोतवाली, 13 जून अल्हैपुर, 17 जून जलीलपुर, 18 जून नहटौर तथा 19 जून को नूरपुर विकासखंड में सम्मिलित नगरीय क्षेत्र विकासखंड मुख्यालय पर शिविरों का आयोजन किया जाएगा। उन्होंने बताया कि जनपद में निवासरत सभी दिव्यांगजनों को चिन्हॉकन शिविर में दिव्यांगता प्रमाण पत्र, आधार कार्ड, दिव्यांगता प्रदर्शित होती फोटो एवं तहसील/प्रधान/जनप्रतिनिधि द्वारा प्रदत्त आय प्रमाण पत्र, ग्रामीण क्षेत्र रु0 46080/- वार्षिक, शहरी क्षेत्र हेतु रू0 56460/से अधिक का आय प्रमाण पत्र न हो, मूल निवास प्रणाम प्रत्र, बैंक की पासबुक आदि की फोटो कापी, मो0 नं0 साथ में लाना आवश्यक है।

आई.जी.आर.एस. पोर्टल पर प्राप्त शिकायतों के निस्तारण में विलंब न हो, कोई भी शिकायती प्रार्थना पत्र डिफाल्टर की श्रेणी में न पहुंचे जिलाधिकारी

असंतुष्ट फीडबैक के प्रति सजग रहें, प्राप्त असंतुष्ट फीडबैक का तत्काल करें निस्तारण, असंतुष्ट फीडबैक के कारण खराब होगी जनपद की रैंकिंग अंजनी कुमार*

(रामजी लाल गोस्वामी)

मैनपुरी जिलाधिकारी अंजनी कुमार सिंह ने जन सुनवाई प्रणाली पोर्टल पर होने वाले असंतुष्ट फीडबैक एवं लम्बित सन्दर्भों की विभागवार समीक्षा के दौरान कहा कि सभी अधिकारी शिकायतों के समयबद्ध, गुणवत्तापरक निराकरण के लिए सजग रहें. प्राप्त शिकायतों का निस्तारण निर्धारित समय-सीमा में हो, शिकायतकर्ता से वार्ता के उपरांत ही उसके संतुष्ट होने पर निस्तारण आंख्या अपलोड की जाए, कोई भी अधिकारी शिकायत के डिफॉल्ट होने की प्रतीक्षा न करें, कोई भी शिकायत सी श्रेणी में न मिले, किसी भी शिकायत में असंतुष्ट फीडबैक प्राप्त न हो। उन्होने कहा कि शासन स्तर से प्राप्त असंतुष्ट फीडबैक में कमी आई है लेकिन कुछ विभागों में असंतुष्ट फीडबैक प्राप्त हुये हैं, सम्बन्धित अधिकारी प्राप्त असंतुष्ट फीडबैक को तत्काल निस्तारित करें। उन्होंने कहा कि मौके पर जाने से पूर्व शिकायतकर्ता से दूरभाष पर वार्ता करें ताकि वह मौके पर मौजूद रहे और उसकी उपस्थिति में समस्या का निदान किया जा सके, शिकायत के निस्तारण के उपरांत मौके पर उपस्थित 02 गवाहों के साथ शिकायतकर्ता के भी हस्ताक्षर कराये जाएं यदि आवेदक असंतुष्ट हो तो शिकायत पर असंतुष्ट होने का कारण इंगित किया जाए। उन्होंने समीक्षा के दौरान कहा कि सर्वाधिक असंतुष्ट फीडबैक विद्युत विभाग से संबंधित प्राप्त हुए हैं, जबकि सबसे ज्यादा 14 में से 12 संतुष्ट फीडबैक जिला पूर्ति अधिकारी के प्राप्त हुए हैं जबकि जिला बेसिक शिक्षाधिकारी, प्रभागीय निदेशक सामाजिक वानिकी के शत-प्रतिशत असंतुष्ट फीडबैक मिले है। श्री सिंह ने हेल्पलाइन सन्दर्भ की समीक्षा करने पर पाया कि दि. 22 अप्रैल से 22 मई के मध्य अधिशाषी अधिकारी नगर पालिका से सम्बन्धित 55 फीडबैक में से 19, अधिशाषी अभियंता सिंचाई

से सम्बन्धित 40 फीडबैक में से 17, तहसीलदार कुरावली से सम्बन्धित 18 फीडबैक में से 12. पूर्ति निरीक्षक कुरावली से सम्बन्धित 19 फीडबैक में से 11, जिला प्रोबेशन अधिकारी से सम्बन्धित 15 फीडबैक में से 09, बाल विकास परियोजना अधिकारी सुल्तानगंज से सम्बन्धित 19 फीडबैक में से 08, बाल विकास परियोजना अधिकारी जागीर से सम्बन्धित 10 फीडबैक में से 07, बाल विकास परियोजना अधिकारी बेवर से सम्बन्धित 19 फीडबैक में से 06, बाल विकास परियोजना अधिकारी घिरोर से सम्बन्धित 16 फीडबैक में से 06, बाल विकास परियोजना अधिकारी बरनाहल से सम्बन्धित 12 फीडबैक में से 05, पूर्ति निरीक्षक किशनी से सम्बन्धित 19 फीडबैक में से 04, पूर्ति निरीक्षक भोगांव से सम्बन्धित 18 फीडबैक में से 04, तहसीलदार सदर से सम्बन्धित 11 फीडबैक में से 04, अधिशाषी अभियंता सिंचाई से सम्बन्धित 15 फीडबैक में से 03, मुख्य पशु चिकित्साधिकारी से सम्बन्धित 13 फीडबैक में से 03. तहसीलदार भोगांव से 15 फीडबैक में से 03, जिला कार्यक्रम अधिकारी से सम्बन्धित 07 फीडबैक में से 03, पूर्ति निरीक्षक सदर से सम्बन्धित 12 फीडबैक में से 03, प्रभारी चिकित्साधिकारी मैनपुरी से सम्बन्धित 04 फीडबैक में से 03, पूर्ति निरीक्षक घिरोर से सम्बन्धित 14 फीडबैक में से 02, बाल विकास अधिकारी परियोजना अधिकारी करहल से सम्बन्धित 09 फीडबैक में से 02, बाल विकास अधिकारी कुरावली, सदर से सम्बन्धित 07 फीडबैक में से 02-02, प्रभारी चिकित्साधिकारी जागीर से सम्बन्धित 05 फीडबैक में से 02, प्रभारी चिकित्साधिकारी कुरावली से सम्बन्धित 04 फीडबैक में से 02, प्रभारी चिकित्साधिकारी करहल से सम्बन्धित 03 फीडबैक में से 02, जिला बेसिक शिक्षाधिकारी, सहायक सम्भागीय परिवहन अधिकारी से सम्बन्धित 02 फीडबैक में से 01-01 शिकायतों के निस्तारण पर असंतुष्ट फीडबैक प्राप्त हुआ है जबकि उप निदेशक कृषि, श्रम प्रवर्तन अधिकारी, सहायक अभियंता लघु सिंचाई उप जिलाधिकारी किशनी, तहसीलदार घिरोर, सब रजिस्ट्रार, सहायक विकास अधिकारी बरनाहल, अधिशाषी अधिकारी नगर पंचायत किशनी से सम्बन्धित शत-प्रतिशत शिकायती प्रार्थना पत्रों पर असंतुष्ट फीडबैक मिला है जिलाधिकारी ने आई.जी.आर.एस. पोर्टल की समीक्षा में पाया कि दि. 22 अप्रैल से 22 मई के मध्य अधिशाषी अभियंता से सम्बन्धित 60 फीडबैक में से 29, मुख्य चिकित्साधिकारी से सम्बन्धित 12 फीडबैक में से 08, जिला बेसिक शिक्षाधिकारी से सम्बन्धित 07 फीडबैक में से 07, श्रम प्रवर्तन अधिकारी, सहायक सम्भागीय परिवहन अधिकारी से सम्बन्धित 05 फीडबैक में से 03-03, जिला आबकारी अधिकारी से सम्बन्धित 05 फीडबैक में से 01, तहसीलदार सदर से सम्बन्धित 21 फीडबैक में से 05, तहसीलदार भोगांव से सम्बन्धित 09 फीडबैक में से 07, तहसीलदार कुरावली से सम्बन्धित 06 फीडबैक में से 04, उप जिलाधिकारी सदर से सम्बन्धित 09 फीडबैक में से 02, उप जिलाधिकारी कुरावली से सम्बन्धित 09 फीडबैक में से 07 शिकायतों के निस्तारण पर असंतुष्ट फीडबैक प्राप्त हुआ है जबकि उप जिलाधिकारी घिरोर, सब रजिस्ट्रार घिरोर, सब रजिस्ट्रार भोगांव, तहसीलदार घिरोर, सब रजिस्ट्रार करहल, बाल विकास परियोजना अधिकारी किशनी, घिरोर, प्रभारी चिकित्साधिकारी सुल्तानगंज से सम्बन्धित शत-प्रतिशत शिकायती प्रार्थना पत्रों पर असंतुष्ट फीडबैक मिला है।